हरियाली अमावस्या प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करने का पर्व

-केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान

मेरीखेती

अक्टूबर 2026 I मूल्य: ₹49

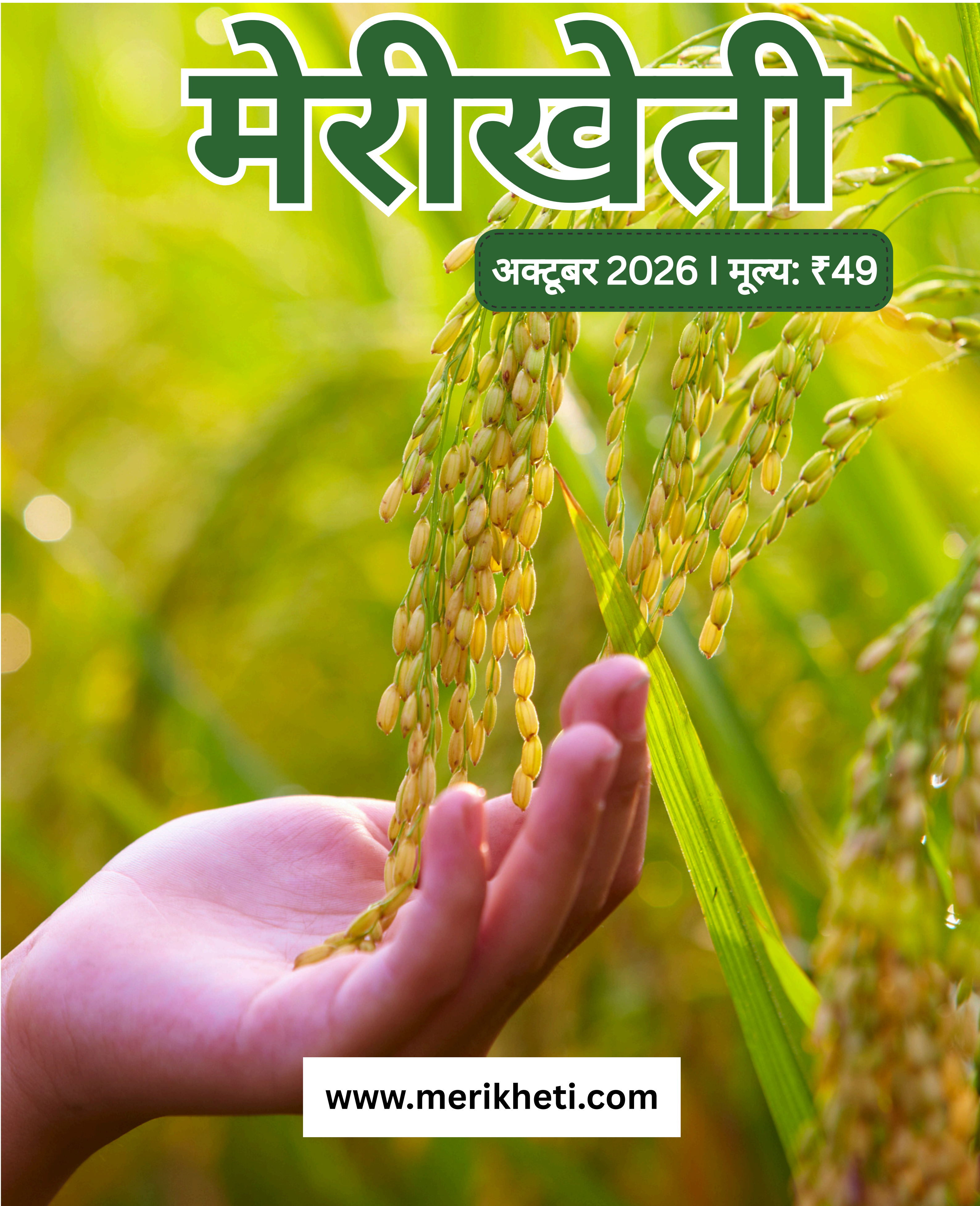

www.merikheti.com

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलिहान	05 - 13
बागवानी फसलें	13 - 22
मशीनरी	22 - 43
कृषि सलाह	43 - 47
पशुपालन-पशुचारा	47 - 54
सम्पादकीय	55 - 59

विज्ञापन के लिए संपर्क करें :
91-9899991906, 91-8800777501

संपादकीय

अक्टूबर: खरीफ की कटाई, रबी की तैयारी और नई कृषि संभावनाओं का महीना

अक्टूबर का महीना भारतीय कृषि व्यवस्था में बदलाव का महत्वपूर्ण समय लेकर आता है। खरीफ फसलें खेतों से घर और मंडियों तक पहुंचने लगती हैं, वहीं किसान रबी सीजन की तैयारियों में जुट जाते हैं। धान, मक्का, बाजरा, कपास, सोयाबीन और अन्य खरीफ फसलों की कटाई के साथ खेतों की अगली फसल के लिए तैयारी शुरू हो जाती है। ऐसे समय में मौसम, मिट्टी और उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखते हुए सही कृषि प्रबंधन करना किसान की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

रबी सीजन की बेहतर शुरुआत के लिए अक्टूबर में खेत की तैयारी पर विशेष ध्यान देना जरूरी है। गेहूं, सरसों, चना, जौ, मटर और अन्य रबी फसलों की बुवाई से पहले खेत की मिट्टी की स्थिति, नमी और पोषक तत्वों की उपलब्धता की जांच करना लाभदायक रहता है। मिट्टी परीक्षण के आधार पर खाद एवं उर्वरकों का संतुलित उपयोग करने से लागत को नियंत्रित करने के साथ फसल की उत्पादकता में भी सुधार किया जा सकता है।

इस महीने किसानों के सामने फसल अवशेष प्रबंधन भी एक महत्वपूर्ण विषय रहता है। खासकर धान की कटाई के बाद खेत में बचे अवशेषों को जलाने के बजाय उनका उचित प्रबंधन करना मिट्टी की सेहत और पर्यावरण दोनों के लिए आवश्यक है। हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, मल्चर और अन्य आधुनिक कृषि यंत्रों की मदद से फसल अवशेषों का बेहतर उपयोग किया जा सकता है। इससे खेत में जैविक पदार्थ की मात्रा बढ़ाने और मिट्टी की संरचना सुधारने में भी मदद मिल सकती है।

अक्टूबर में मौसम में बदलाव के कारण फसलों में कीट एवं रोगों की समस्या भी सामने आ सकती है। इसलिए किसानों को खेतों की नियमित निगरानी करनी चाहिए और किसी भी रोग या कीट के लक्षण दिखाई देने पर कृषि विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार ही नियंत्रण उपाय अपनाने चाहिए। अनावश्यक कीटनाशकों के इस्तेमाल से बचते हुए एकीकृत कीट प्रबंधन को अपनाना खेती को अधिक सुरक्षित और टिकाऊ बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

आज कृषि केवल पारंपरिक तरीकों तक सीमित नहीं है। ड्रोन, सेंसर आधारित सिंचाई, मौसम पूर्वानुमान, आधुनिक कृषि यंत्र, उन्नत बीज और डिजिटल कृषि सेवाएं किसानों को बेहतर निर्णय लेने में मदद कर रही हैं। किसान यदि स्थानीय मौसम की जानकारी, मंडी भाव और कृषि विशेषज्ञों की सलाह का उपयोग समय पर करें, तो खेती से जुड़े जोखिमों को कम करने में सहायता मिल सकती है।

अक्टूबर हमें यह भी याद दिलाता है कि खेती केवल एक मौसम की नहीं, बल्कि पूरे वर्ष की योजना का विषय है। खरीफ की मेहनत के बाद रबी की तैयारी में किसी तरह की जल्दबाजी या लापरवाही आगे चलकर उत्पादन और लागत दोनों को प्रभावित कर सकती है। इसलिए खेत की तैयारी से लेकर बीज चयन, बुवाई, सिंचाई और पोषण प्रबंधन तक हर कदम सोच-समझकर उठाना जरूरी है।

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौर्ड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान

डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

चने की अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिए किसान अपनाएं यह उन्नत बुवाई विधि

रबी सीजन में चने की खेती से करें ज्यादा कमाई – जानें वैज्ञानिक बुवाई पद्धति

तबीजी फार्म अजमेर के उप निदेशक कृषि (शस्य) श्री मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि चना रबी सीजन की एक प्रमुख दलहनी फसल है, जो मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के साथ-साथ किसानों के लिए आर्थिक दृष्टि से भी लाभकारी है। उन्होंने कहा कि चने की खेती के लिए ऐसी भूमि उपयुक्त रहती है जो लवण और क्षार रहित, जल निकास वाली और उपजाऊ हो। वर्तमान समय चने की बुवाई के लिए अत्यंत उपयुक्त माना जाता है। यदि किसान बुवाई से पहले मृदा उपचार (Soil Treatment) एवं बीजोपचार (Seed Treatment) करें तो फसल को कीटों व रोगों से प्रभावी रूप से बचाया जा सकता है, जिससे उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। उन्होंने किसानों को यह भी सलाह दी कि कृषि रसायनों का उपयोग करते समय सुरक्षा उपकरणों का अवश्य प्रयोग करें – जैसे पूरे कपड़े, दस्ताने, मास्क और जूते पहनें, ताकि स्वास्थ्य पर किसी प्रकार का दुष्प्रभाव न पड़े।

बीजोपचार और भूमि उपचार से बढ़ेगी पैदावार

कृषि अनुसंधान अधिकारी (पौध व्याधि) डॉ. जितेन्द्र शर्मा ने बताया कि बीजोपचार फसल को बीज और मिट्टी जनित रोगों एवं कीटों से बचाने के साथ-साथ बीज अंकुरण की दर बढ़ाने में मदद करता है।

चने की फसल में अक्सर जड़ गलन (Root Rot), सूखा जड़ गलन (Dry Root Rot) और उकठा (Wilt) जैसे रोगों का प्रकोप होता है, जो उत्पादन को 30–40% तक घटा सकते हैं।

इन रोगों से बचाव के लिए किसानों को फसल चक्र (Crop Rotation) अपनाना चाहिए और खेत की मिट्टी को ट्राईकोडर्मा से उपचारित करना चाहिए।

भूमि उपचार की विधि:

बुवाई से पहले 2.5 किलो ट्राईकोडर्मा को 100 किलो आर्द्र गोबर की खाद में अच्छी तरह मिलाएं और इस मिश्रण को 10–15 दिनों तक छाया में रखें। इसके बाद बुवाई के समय प्रति हेक्टेयर की दर से यह खाद

मिट्टी में मिला दें। इससे मिट्टी में रोगाणु नष्ट होते हैं और पौधों की जड़ें मजबूत बनती हैं।

बीजोपचार की विधि:

बुवाई से पहले बीजों को निम्न में से किसी एक उपचार से तैयार करें:

- कार्बेण्डाजिम 1 ग्राम + थाइरम 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज, या
- कार्बोक्सीन 37.5% + थाइरम 37.5% (2 ग्राम प्रति किलो बीज), या
- ट्राईकोडर्मा 10 ग्राम प्रति किलो बीज

इन उपचारों से बीज रोगमुक्त रहेंगे और अंकुरण दर 90% तक बढ़ेगी।

कीट नियंत्रण के लिए अपनाएं ये उपाय

सहायक कृषि अनुसंधान अधिकारी (कीट) डॉ. सुरेश चौधरी के अनुसार, चने की फसल में दीमक, कटवर्म और वायरवर्म जैसे कीटों का प्रकोप अधिक देखा जाता है। इनसे बचाव के लिए किसानों को चाहिए कि वे अंतिम जुताई से पूर्व क्यूनालफॉस 1.5% चूर्ण 25 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में भुरकाव करें। इसके अलावा बीजों को फिप्रोनिल 5 एस.सी. (10 मि.ली./किलो बीज) या इमीडाक्लोप्रिड 600 एफ.एस. (5 मि.ली./किलो बीज) से उपचारित करने पर दीमक एवं अन्य मिट्टी जनित कीटों से फसल की प्रारंभिक अवस्था में प्रभावी सुरक्षा मिलती है।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

कृषि अनुसंधान अधिकारी (रसायन) डॉ. कमलेश चौधरी ने बताया कि चने की अधिक उपज के लिए संतुलित पोषण प्रबंधन बेहद जरूरी है। बुवाई से पूर्व बीजों को तरल आधारित राईजोबियम, फॉस्फेट सॉल्युबिलाइजिंग बैक्टीरिया (PSB), गंधक एवं जिंक घोलक जैसे जैव उर्वरकों की 3 से 5 मिली लीटर प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। ये सूक्ष्मजीव मिट्टी में नाइट्रोजन स्थिरीकरण, फॉस्फोरस घुलनशीलता और सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाते हैं।

कृषि अनुसंधान अधिकारी (शस्य) रामकरण जाट ने बताया कि चने की अधिकतम पैदावार के लिए मृदा परीक्षण आधारित पोषण प्रबंधन अपनाना चाहिए।

- असिंचित क्षेत्रों में: 10 किलो नाइट्रोजन (N) + 25 किलो फास्फोरस (P_2O_5) प्रति हेक्टेयर
- सिंचित क्षेत्रों में: 20 किलो नाइट्रोजन (N) + 40 किलो फास्फोरस (P_2O_5) प्रति हेक्टेयर

इन उर्वरकों को आखिरी जुताई के समय 12–15 सेंटीमीटर की गहराई पर मिट्टी में मिला देना चाहिए ताकि पौधों को पोषक तत्व शुरू से ही मिल सकें।

खरपतवार नियंत्रण के उपाय

चना की सिंचित फसल में प्रारंभिक अवस्था में खरपतवार तेजी से बढ़ते हैं, जिससे पैदावार प्रभावित होती है। इसे नियंत्रित करने के लिए:

- पेन्डीमिथेलीन 30 ई.सी. – 2.5 लीटर प्रति हेक्टेयर, या
- पेन्डीमिथेलीन 38.7 सी.एस. – 1.9 लीटर प्रति हेक्टेयर

इनमें से किसी एक शाकनाशी को 600 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के बाद लेकिन बीज अंकुरण से पहले छिड़काव करें। इससे खेत 25–30 दिनों तक खरपतवार मुक्त रहता है, और पौधों की वृद्धि समान रूप से होती है।

निष्कर्ष

यदि किसान उपरोक्त उन्नत कृषि तकनीकों का पालन करें — जैसे बीजोपचार, भूमि उपचार, फसल चक्र, संतुलित उर्वरक उपयोग और उचित खरपतवार नियंत्रण — तो वे प्रति हेक्टेयर 20–25 क्विंटल तक की उच्च उपज प्राप्त कर सकते हैं। चना न केवल मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने वाली फसल है बल्कि यह किसानों को रबी सीजन में बेहतर आमदनी का अवसर भी प्रदान करती है।

MASSEY FERGUSON

MASSEY FERGUSON
254 DYNASMART

मसूर की खेती की उन्नत तकनीक के बारे में जानकारी

मसूर (लेंस क्यूलिनेरिस) एक महत्वपूर्ण दलहन फसल है जो विश्वभर में उगाई जाती है। भारत में इसकी खेती मुख्यतः उत्तरी और मध्य क्षेत्रों में की जाती है। असिचिंत क्षेत्रों में चने की खेती के बाद मसूर की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। मसूर की फसल पाले और ठण्ड के लिए अति संवदेनशील है, पर दूसरी रबी फसलों की तुलना में ये अधिक ठण्ड सहन कर सकती है। मसूर एक पौष्टिक फसल है क्योंकि यह प्रोटीन, फाइबर, कई विटामिन और खनिजों से भरपूर है। यह फसल सूखी मिट्टी में भी अच्छे से उगाई जा सकती है, इसलिए यह किसानों के लिए एक अच्छा विकल्प है। हम मसूर की खेती की पूरी जानकारी इस लेख में देंगे।

मसूर की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु और मिट्टी

मसूर एक रबी फसल है, इसलिए इसको ठंडी जलवायु पसंद है। मसूर को ठंडी जलवायु पसंद है इसलिए इस फसल अत्यधिक सर्दी को अच्छी तरह सहन कर सकती है। इसकी वानस्पतिक वृद्धि के दौरान ठंडे तापमान और परिपक्वता के समय गर्म तापमान की जरूरत होती है। यह फसल 10-25 डिग्री सेल्सियस तापमान में सबसे अच्छे से उगती है। इस फसल की वार्षिक वर्षा आवश्यकता 300-400 मि.मी. की होती है। मसूर के लिए अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी सबसे अच्छी है। मिट्टी का pH 6-7.5 होना चाहिए। बीज बोने से पहले मिट्टी को खरपतवार से मुक्त करना चाहिए। भारी मिट्टी पर गहरी जुताई करने के बाद दो या तीन बार हैरो से जुताई करनी चाहिए। खेत को पाटा लगाने के बाद समतल करना चाहिए और सिंचाई को आसान बनाने के लिए हल्का ढलान लगाना चाहिए।

मसूर के बीज उपचार की वैज्ञानिक विधि

मसूर की फसल को बीज जनित रोगों से बचाने के लिए बीज उपचार बहुत जरूरी है, इसलिए बीज की बुवाई से पहले बीज उपचार जरूर कर लें। बीज को सबसे पहले फफूंदनाशक से उपचारित करें उसके बाद

कीटनाशक से उपचार करना चाहिए एवं अंत में बुवाई से पहले राइज़ोबियम एवं पी एस बी से उपचारित करना फसल में किट एवं रोगों को नियंत्रित करता है। बीज उपचार के लिए थिरम (2 ग्राम) + कार्बेन्डाजिम (1 ग्राम) या थिरम @ 3 ग्राम या कार्बेन्डाजिम @2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम, और कीटनाशक के लिए क्लोरपायरीफॉस 20ई.सी. @8 मि.ली./किलोग्राम का उपयोग किया जा सकता है। राइजोबियम और पीएसबी का एक-एक पैकेट 10 किलोग्राम बीज के लिए उपयोगी होता है।

मसूर की उन्नत किस्में

फसल की अच्छी किस्में अधिक उपज दे सकती है। इसलिए बुवाई के लिए उन्नत किस्मों का ही चुनाव करना चाहिए।

मसूर की उन्नत किस्में निम्नलिखत है - JLPant L-639, Pant L-4, DPL-15 (Priya), Sapna, L-4147, DPL-62 (Sheri), Pant L-406, PL 639, Mallika (K-75), NDL 2, JL 3, IPL 81 (Nuri), LL-147, LH-84-8, और JL -3, JL-1 ,IPL-81 आदि इसकी उन्नत किस्में है।

बुआई का अनुशंसित समय

मध्य और दक्षिण भारत में अक्टूबर का पहला पखवाड़ा और उत्तर भारत में अक्टूबर का दूसरा पखवाड़ा बुआई के लिए आदर्श समय माना जाता है।

बीज दर और बीज उपचार

प्रति हेक्टेयर 35-40 किलोग्राम बीज की दर उपयुक्त रहती है। बुआई फर्टी-सीड-ड्रिल या देसी हल का उपयोग करके की जा सकती है। बुवाई से पहले बीजों को फफूंदनाशक दवाओं से उपचारित करना चाहिए।

मसूर की फसल में खाद और उर्वरक प्रबंधन

फसल में जुताई के समय खेत में 10 टन गोबर की खाद या कम्पोस्ट का उपयोग करना चाहिए। इसके बाद सामान्यतः, 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस, और 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की बेसल ड्रेसिंग की जाती है। कम उपजाऊ मिट्टी में रासायनिक उर्वरकों का संतुलित मात्रा में उपयोग किया जाना चाहिए, जैसे NPK (नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, और पोटैशियम)। समय पर उर्वरको का इस्तेमाल करके फसल से अछि उपज प्राप्त की जा सकती है।

सिंचाई प्रबंधन

मसूर की फसल को अत्यधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती। पहली सिंचाई रोपण के 40-45 दिन बाद और दूसरी फली भरने की अवस्था पर करनी चाहिए। फूल आने और फली बनने के चरण में नमी की कमी महत्वपूर्ण होती है। मध्य भारत में, उपज में सुधार के लिए दो हल्की सिंचाइयाँ की जा सकती हैं। अधिक सिंचाई से फसल की गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवारों से फसल को मुक्त रखने के लिए दो बार हाथ से निराई-गुड़ाई करें, पहली बार 25-30 दिन पर और दूसरी बार 45-50 दिन बाद। खरपतवारनाशी जैसे पेन्डीमेथालिन 30 ईसी @ 0.75-1 किलोग्राम ए.आई. प्रति हेक्टेयर का उपयोग भी किया जा सकता है। प्रारंभिक 45-60 दिनों की खरपतवार-मुक्त अवधि बहुत महत्वपूर्ण होती है।

फसल की कटाई और कढ़ाई

जब पत्तियाँ गिरने लगती हैं और तना व फलियाँ भूरे रंग की हो जाती हैं, तो फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती है। कटाई के समय बीज कठोर और खड़खड़ाने वाले होते हैं और उनकी नमी 15% होती है।पकने के बाद फलियाँ गिरने और बीज फटने का खतरा हो सकता है। कटाई में देरी होने पर नमी 10% से कम हो सकती है। कटाई के बाद फसल को खेत में 4-7 दिनों तक सूखने दें और फिर गहाई करें।मैन्युअल या थ्रेशर से बीज को फलियों से अलग किया जा सकता

है। साफ बीज को 3-4 दिनों तक धूप में सुखाएँ ताकि उनकी नमी 9-10% तक पहुंच सके। बीज को सुरक्षित तरीके से संग्रहित किया जाना चाहिए।

सरसों की खेती - सरसों की इन उन्नत किस्मों से बढ़ेगा सरसों का उत्पादन

तिलहन फसलों की पैदावार और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए देशभर के कृषि विश्वविद्यालय निरंतर नई-नई उन्नत किस्मों के विकास पर कार्य कर रहे हैं। इसी क्रम में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू), हिसार को सरसों के अनुसंधान एवं विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए सर्वश्रेष्ठ केंद्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के सहायक महानिदेशक डॉ. संजीव कुमार गुप्ता द्वारा भारतीय सरसों अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर में आयोजित अखिल भारतीय राया एवं सरसों अनुसंधान कार्यकर्ताओं की 32वीं बैठक में प्रदान किया गया।

सरसों की खेती: सरसों की उन्नत किस्में और उनकी खासियत (Sarso Ki Kheti)

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने बताया कि पिछले वर्ष सिंचित क्षेत्रों के लिए विकसित आरएच 1975 किस्म किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रही है। इस किस्म की औसत उपज 11–12 क्विंटल प्रति एकड़ और अधिकतम क्षमता 14–15 क्विंटल प्रति एकड़ है। इसमें लगभग 39.5% तेल की मात्रा पाई जाती है, जो इसे अधिक लाभकारी बनाती है। इससे किसानों की आय में बढ़ोतरी और तिलहन उत्पादन में मजबूती आई है। विश्वविद्यालय इस किस्म का बीज आगामी रबी सीजन में किसानों को उपलब्ध कराएगा। इसके अतिरिक्त, वैज्ञानिकों ने आरएएचएच 2101, आरएच 1424 और आरएच 1706 जैसी हाइब्रिड किस्में भी तैयार की हैं, जो सरसों की उत्पादकता बढ़ाने में अहम भूमिका निभाएंगी। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने आशा व्यक्त की कि इन किस्मों की विशिष्ट विशेषताओं के कारण यह हरियाणा के साथ-साथ राजस्थान, यूपी, एमपी, बिहार और दिल्ली जैसे राज्यों में भी लोकप्रिय होंगी।

विश्वविद्यालय की उपलब्धियां और भविष्य की योजनाएं

तिलहन अनुभाग के प्रमुख डॉ. राम अवतार ने बताया कि आईसीएआर द्वारा यह पुरस्कार चौथी बार मिला है, जो विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है। अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा के अनुसार, अब तक एचएयू की टीम राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर 23 सरसों की किस्में विकसित कर चुकी है। 2018 में विकसित किस्म आरएच 725 राजस्थान और बिहार सहित कई राज्यों में अत्यंत लोकप्रिय है, जिसकी पैदावार 25–30 मण प्रति एकड़ तक प्राप्त हो रही है।

इस उपलब्धि में योगदान देने वाले प्रमुख वैज्ञानिकों में डॉ. दलीप कुमार, डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. विनोद गोयल, डॉ. नीरज, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. श्वेता, डॉ. राजबीर खेड़वाल और डॉ. आकाश शामिल हैं।

अतिरिक्त जानकारी

चौधरी चरण सिंह एचएयू का लक्ष्य आने वाले वर्षों में सरसों की ऐसी किस्में विकसित करना है जो न केवल उच्च पैदावार दें, बल्कि जलवायु परिवर्तन और कीट-रोगों के प्रति भी अधिक सहनशील हों। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक उन्नत ब्रीडिंग तकनीकों और आधुनिक जैव-प्रौद्योगिकी का उपयोग करके ऐसी किस्मों पर शोध कर रहे हैं जिनमें तेल की मात्रा 40% से अधिक हो और कम अवधि में पकने की क्षमता हो।
नई किस्में किसानों को खेती में जोखिम घटाने और लागत कम करने में मदद करेंगी। उदाहरण के लिए, आरएच 1975 किस्म में नमी और सूखा दोनों परिस्थितियों को सहने की क्षमता है, जिससे बदलते मौसम में भी स्थिर उपज मिल सके। इसके साथ ही, विश्वविद्यालय किसानों को प्रशिक्षण शिविर, फील्ड डेमो और बीज वितरण कार्यक्रम के माध्यम से आधुनिक खेती तकनीकें अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है।
इन प्रयासों से न केवल हरियाणा बल्कि देश के अन्य सरसों उत्पादक राज्यों में तिलहन उत्पादन का स्तर बढ़ेगा और भारत के खाद्य तेल आयात पर निर्भरता भी कम होगी। यह उपलब्धियां भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होंगी।

तारामीरा की खेती: कम पानी और सूखे क्षेत्रों के लिए लाभदायक फसल

तारामीरा की खेती अक्सर बारानी क्षेत्रों में की जाती है, जहाँ अन्य फसलों को सफलतापूर्वक उगाया नहीं जा सकता है। ज्वार की फसल लेने के बाद खरीफ की चारे (उड़द, मूंग, चंवला आदि) को हल्की जुताई करके सफलतापूर्वक इसको बोया जा सकता है। रबी मौसम में तारामीरा की बुवाई करने के लिए वर्षा ऋतु में खेत खाली नहीं छोड़ना चाहिए। इस लेख में हम आपको तारामीरा की सफल खेती के बारे में जानकारी देंगे।

तारामीरा की खेती के लिए जलवायु और मिट्टी

तारामीरा की खेती रबी के मौसम में की जाती है इसकी खेती के लिए ठंडी जलवायु की आवश्कता होती हैं। तारामीरा को कम वर्षा वाले इलाकों में आसानी से उगाया जा सकता हैं, इसकी खेती के लिए अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती हैं। इसकी खेती हल्की दोमट मिट्टी में आसनी से की जा सकती हैं। इसकी खेती के लिए भूमि अच्छी तरह से

लगे हटके
करे हटके
बोल्ड एंड ब्लैक
DIGITRAC
PP43i
37.3 kW श्रेणी
50 HP श्रेणी

भुरभुरीकी होनी चाहिए। वैसे इसकी खेती हर प्रकार की मिट्टी में आसानी से की जा सकती हैं।

तारामीरा की उन्नत किस्में और बीज की मात्रा

तारामीरा की अधिक उपज प्राप्त करने के लिए अच्छी किस्मों का चुनाव करना बहुत आवश्यक हैं। इसकी किस्में निम्नलिखित हैं जो कि अच्छी देखभाल करने पर अच्छी उपज दे सकती हैं:

- टी- 27
- वल्लभ तारामीरा- 2
- आरटीएस
- आरटीएम (नरेन्द्रतारा)
- आरटीएम- 314

तारामीरा की खेती (Taramira Farming) के लिए 5 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टेयर पर्याप्त होता है। बुवाई से पहले बीज को 1.5 ग्राम मैंकोजेब द्वारा प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज को उपचारित करें।

खेत की तैयारी और बुवाई

तारामीरा की बुवाई करने के लिए खेती की 2 बार हल या कल्टीवेटर से अच्छी तरह जुताई कर लेनी चाहिए जिससे की मिट्टी भुरभुरी हो जाए।

बारानी क्षेत्रों में बुवाई का समय भूमि की नमी और तापमान पर निर्भर करता है। नमी की उपलब्धि के आधार पर तारामीरा (Taramira) की बुवाई 15 सितम्बर से 15 अक्टूबर तक कर देनी चाहिए।

कतारों में 5 सेंटीमीटर गहरा बीज बोए। कतार से कतार की दूरी 40 सेंटीमीटर रखें।

तारामीरा की कटाई

तारामीरा फसल के पत्ते झड़ने लगे और फलियां पीली पड़ने लगे तो उसे काट लेना चाहिए, अन्यथा दाने खेत में झड़ने की संभावना रहती है।

उपरोक्त तकनीक और अनुकूल परिस्थितियों से 12 से 17 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन मिलता है।

Cultivation of Broccoli : ब्रोकली की खेती के तरीकों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी

ब्रोकली एक हरी पत्तेदार सब्जी है जो गोभी परिवार से संबंधित है। इसका वैज्ञानिक नाम Brassica oleracea var. italica है। इसकी पौष्टिकता और स्वास्थ्य लाभ के कारण ब्रोकली विश्वभर में लोकप्रिय है। यह विटामिन, खनिज, और एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होती है, जो कई बीमारियों से बचाने में सहायक होती है।

ब्रोकली की दो प्रमुख किस्में हैं:

स्प्राउटिंग और हेडिंग ब्रोकली, जिनमें से स्प्राउटिंग ब्रोकली अधिक पसंद की जाती है। हेडिंग ब्रोकली हरा, पीला या बैंगनी रंग की हो सकती है और यह फूलगोभी की तरह होती है। हरा रंग अधिक लोकप्रिय है और इसे सलाद, सूप, और सब्जी में इस्तेमाल किया जाता है। इसकी बाजार में मांग निरंतर बढ़ रही है, जिससे इसकी खेती करने वालों को अच्छा मुनाफा हो रहा है। आइए अब इसके खेती

के तरीकों पर विस्तार से चर्चा करें।

ब्रोकली की खेती के लिए जलवायु और तापमान

ब्रोकली ठंडे मौसम की फसल है और इसे 15°C से 25°C तापमान पर उगाना सबसे अच्छा होता है। अत्यधिक गर्मी या ठंड पौधों की वृद्धि को प्रभावित कर सकती है। इसे मुख्यतः सर्दियों में उगाया जाता है।

ब्रोकली की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी

- ब्रोकली के लिए हल्की दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है, जिसमें पीएच स्तर 6 से 7 के बीच हो।
- मिट्टी को अच्छे से जुतकर और जैविक खाद मिलाकर तैयार करें। मिट्टी की जल निकासी अच्छी होनी चाहिए ताकि पानी जमा न हो सके।

ब्रोकली की उन्नत किस्में

ब्रोकली की उन्नत किस्में निम्नलिखित हैं:

- अगेती किस्में : ये 60 से 65 दिनों में तैयार हो जाती हैं। प्रमुख अगेती किस्मों में डी सिक्को, केलेब्रस, ग्रीन बड शामिल हैं, और संकर किस्मों में जिप्सी, अर्काडिया, ग्रीन मैजिक शामिल हैं।
- मध्यम अवधि की किस्में : ये 75 से 90 दिनों में तैयार होती हैं। प्रमुख किस्मों में बालथम 29, ग्रीन स्प्राउटिंग मीडिया, डेस्टिनी, मैराथन और एमेराल्ड शामिल हैं।

ब्रोकली की खेती के लिए भूमि की तैयारी

- बुवाई का समय : ब्रोकली के लिए सबसे अच्छा समय सर्दी का होता है। उत्तर भारत में इसे अक्टूबर से नवंबर तक बोया जाता है, जबकि दक्षिण भारत में अगस्त-सितंबर में बोया जाता है।
- बीज दर और बुवाई की विधि : प्रति हेक्टेयर 300-400 ग्राम बीज की जरूरत होती है। बीज पहले नर्सरी में बोए जाते हैं और 25-30 दिन बाद पौधों को खेत में रोपित किया जाता है।

ब्रोकली की रोपाई नर्सरी की तैयारी

- नर्सरी की क्यारी को 15 सेमी ऊँचा बनाकर उसमें अच्छी सड़ी गोबर या कम्पोस्ट खाद और प्रति वर्गमीटर 50-60 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट मिलाकर तैयार करें।
- कीट और रोगों से बचाव के लिए सुरक्षा उपाय अपनाएं। क्यारी में प्रति वर्गमीटर 5 ग्राम थायरम डालें और 1.5-2 सेमी गहरी कतारें निकालें।
- बीजों को 10 ग्राम ड्राईकोडर्मा, 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम, या 2.5 ग्राम थायरम के साथ उपचारित करें और हल्की फव्वारे से सिंचाई करें। अधिक वर्षा से बचने के लिए क्यारी को घास-फूस या पॉलीथीन शीट से ढकें।
- बेमौसमी खेती के लिए पौधों को पॉलिहाउस या पॉलिटनल में उगाएं। पॉलिहाउस में जड़ों का तापमान कम होने पर हीटर का उपयोग करें ताकि बीजों का अंकुरण तेजी से हो।

नर्सरी की खेत में रोपाई

- 25-30 दिन पुरानी पौध रोपाई के लिए उपयुक्त होती है। रोपाई से पहले खेत में नाइट्रोजन की आधी मात्रा, फॉस्फोरस, पोटाश की पूरी मात्रा और प्रति नाली 500 ग्राम थीमेट छिड़ककर खेत तैयार करें।
- पौधों के बीच 45-50 सेमी और कतारों के बीच 45-50 सेमी दूरी रखकर रोपाई करें और हल्की सिंचाई करें। यदि कुछ पौधे मर जाएं, तो एक हफ्ते के भीतर नई पौध लगाकर स्थान को भर दें।
- रोपाई के एक महीने बाद बची हुई नाइट्रोजन छिड़कें और पौधों के चारों ओर मिट्टी चढ़ाएं। उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी के परीक्षण के आधार पर करें।

प्रति हेक्टेयर 15-20 टन गोबर या कम्पोस्ट खाद, 100 किलो नाइट्रोजन, 100 किलो फॉस्फोरस, और 50 किलो पोटाश का उपयोग करें।

सिंचाई

ब्रोकली की खेती में पर्याप्त नमी बनाए रखना आवश्यक है। रोपाई के तुरंत बाद सिंचाई करें और फिर हर 10-12 दिन पर सिंचाई करें। फसल के विकास की अवधि में मिट्टी में नमी बनी रहनी चाहिए।

कटाई और उत्पादन

- ब्रोकली की कटाई आमतौर पर रोपाई के 70-90 दिन बाद की जाती है।
- जब ब्रोकली का हेड पूरी तरह विकसित हो जाए और फूल खिलने से पहले, उसे काटा जाता है। प्रति हेक्टेयर औसतन 120-150 क्विंटल उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।
- ब्रोकली की सही खेती से न केवल बेहतर उत्पादन मिल सकता है, बल्कि यह किसानों के लिए एक लाभकारी व्यवसाय भी बन सकता है।
- इसके स्वास्थ्य लाभ और बाजार में बढ़ती मांग इसे एक आकर्षक कृषि विकल्प बनाती है।

क्लियोम का फूल: कैसे उगाया जाता है क्लियोम का पौधा?

क्लियोम एक फूल की प्रजाति है जो की कई कामों के लिए इस्तेमाल किया जाता हैं। Cleome एक आकर्षक पौधा हैं जिसको विशेष रूप से बागवानी में सजावटी पौधे के रूप में उगाया जाता हैं।

ये एक रैंगिंग फूल वाला पौधा हैं जो की बगीचों में एक आकर्षण के लिए बनाया जाता हैं। इसका वैज्ञानिक नाम क्लियोम हैसलेरियाना हैं, क्लियोम के पौधे को सूरजमुखी के साथ भी आसनी से उगाया जा सकता हैं।

क्लियोम की विशेषताएँ

क्लियोम के पौधों को गर्मी के मौसम में उगाया जाता हैं। इसके वैरायटी के आधार पर कई प्रकार होते हैं। क्लियोम की ऊंचाई पौधे की वैरायटी के आधार पर अलग अलग होती हैं। इसकी ऊंचाई 1½- से 5-फीट तक होती हैं और ये पौधा 1- से 2-फीट तक फैलता हैं। इसके अलावा बौनी किस्मों की लंबाई 1½- से 4-फीट तक हो सकती हैं और 2 फिट तक चौड़ाई होती हैं। इसमें गुलाबी, बैंगनी, सफेद और लैवेंडर के फूल ध्यान देने योग्य सुगंध नहीं छोड़ते हैं, फिर भी हमिंगबर्ड, तितलियाँ और हमिंगबर्ड पतंगे पूरी गर्मियों में इन फूलों की ओर आकर्षित होते हैं।

क्लियोम की प्रजातियाँ

क्लियोम की 100 से भी ज्यादा प्रजातियाँ पायी जाती हैं। इनमे से कुछ किस्मे ऐसी हैं जिनको बगीचों में उगाया जा सकता हैं। क्लियोम की सी. हैसलेरियाना किस्म अपने रंग और फूल की क्वॉलिटी के कारण अधिक लोकप्रिय बना हुआ हैं, इसके प्रकार निम्नलिखित हैं -

1. हेलेन कैम्पबेल

ये क्लियोम की एक ऐसी किस्म हैं जिसमे सफ़ेद फूल आते हैं, इसकी किस्म की बुवाई के बाद अधिक देखभाल की आवश्यकता नहीं होती हैं।

2. आर्मस्ट्रांग किस्म

इसका फूल गुलाबी या बैंगनी रंग का होता है, और यह 12 से 18 इंच लंबा, बाँझ और कांटे रहित होता है।

3. रोज क्वीन

रोज क्वीन एक सुगंधित, आकर्षक नाम है। यह गुलाब, सफेद, चेरी और बैंगनी रंगों में आता है। प्रत्येक पत्ती के आधार पर उगने वाली कांटों को देखें।

4. स्पिरिट सीरीज

स्पिरिट सीरीज के पौधे 2 से 4 फुट ऊंचे हैं और बेहतर शाखायुक्त वृद्धि की आदत रखते हैं, लेकिन उनमें कांटे और चिपचिपे पत्ते होते हैं। लैवेंडर, गुलाबी या सफेद रंग के फूल होते हैं।

क्लियोम कैसे उगाएं ?

क्लियोम की बुवाई सीधी बीज से की जा सकती हैं, बुवाई के लिए बगीचे को अच्छे से तैयार कर ले। बुवाई के लिए उत्तम बीज का चुनाव करना चाहिए। इसके बीज स्थानीय नर्सरी, बागवानी केंद्र या ऑनलाइन बागवानी स्टोर्स से प्राप्त किए जा सकते हैं।
बीजों को अंकुरित करने के लिए प्रकाश की जरूरत होती है, इसलिए आप उन्हें बगीचे में छिड़क सकते हैं जब ठंढ का खतरा टल जाए और मिट्टी का तापमान 20-25°C हो जाएगा।
दस दिनों के बाद इसके बीजो का अंकुरण हो जाता हैं। क्लियोम के बीजों को गर्मियों के अंत या वसंत ऋतू के अंत में बोया जा सकता हैं।

मूली की नई और उन्नत किस्मों की सूची

लेखक: डॉ वीरेन्द्र सिंह गहलान

1. पूसा मृदुला:

- विवरण: IARI द्वारा विकसित। सफेद, मुलायम जड़ें (25-30 सेमी), कम तीखी। गर्मी और आर्द्रता सहनशील। 35-45 दिन में तैयार। पैदावार: 30-35 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: मार्च से सितंबर।

2. पूसा गुलाबी:

- विवरण: IARI की नई किस्म। गुलाबी जड़ें (20-25 सेमी), हल्की मीठी। सलाद के लिए लोकप्रिय। 40-50 दिन में परिपक्व। पैदावार: 25-30 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: सितंबर से फरवरी।

3. अर्का निशांत:

- विवरण: IIHR की किस्म। लंबी, सफेद जड़ें (30-35 सेमी), फफूंदी-प्रतिरोधी। गर्मी और सर्दी दोनों के लिए। 40-45 दिन में तैयार। पैदावार: 30-40 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अगस्त से जनवरी।

WIDER PLATFORM WITH DOUBLE FOOTSTEP

Enhances operator comfort

3630 TX Plus+

Special Edition

4. सिंजेंटा आइवरी व्हाइट:

- विवरण: हाइब्रिड। चिकनी, सफेद जड़ें (25-30 सेमी), कुरकुरी। ठंड में बेहतर। 40-50 दिन में तैयार। पैदावार: 35-40 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अगस्त से नवंबर।

5. एफ-1 उजला (IFFCO):

- विवरण: हाइब्रिड। सफेद, एकसमान जड़ें (25-30 सेमी), हल्का तीखापन। सर्दियों में उच्च पैदावार। 45-55 दिन में परिपक्व। पैदावार: 30-35 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अगस्त से नवंबर।

6. रेड प्रिंस:

- विवरण: लाल मूली, हाइब्रिड। गोल जड़ें (4-5 सेमी), रसीली, हल्का तीखा स्वाद। सलाद के लिए। 25-35 दिन में तैयार। पैदावार: 15-20 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: सितंबर से मार्च।

7. रेड डायमंड:

- विवरण: लाल मूली। चमकदार, गोल जड़ें (3-4 सेमी), मीठी और कुरकुरी। निर्यात के लिए। 25-30 दिन में परिपक्व। पैदावार: 12-18 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अक्टूबर से फरवरी।

8. सोसाइटी लॉन्ग:

- विवरण: जापानी सफेद हाइब्रिड। लंबी जड़ें (35-45 सेमी), कुरकुरी। गर्मी और सर्दी में उपयुक्त। 45-55 दिन में तैयार। पैदावार: 35-45 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अगस्त से दिसंबर।

9. पूसा हाइब्रिड-1:

- विवरण: IARI की हाइब्रिड। सफेद, बेलनाकार जड़ें (25-30 सेमी), गर्मी-सहनशील। 40-45 दिन में परिपक्व। पैदावार: 30-35 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: मार्च से अगस्त।

10. अर्का श्वेता:

- विवरण: IIHR द्वारा। चमकदार सफेद जड़ें (25-30 सेमी), कम तीखी। ठंड और गर्मी में अनुकूल। 35-40 दिन में तैयार। पैदावार: 25-30 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: सितंबर से जनवरी।

11. कावेरी व्हाइट:

- विवरण: निजी हाइब्रिड। लंबी, सफेद जड़ें (30-35 सेमी), एकसमान। सर्दियों में बेहतर। 40-50 दिन में परिपक्व। पैदावार: 30-40 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अक्टूबर से जनवरी।

12. स्नो व्हाइट:

- विवरण: हाइब्रिड। छोटी, सफेद जड़ें (15-20 सेमी), सलाद के लिए। ठंडी जलवायु में उपयुक्त। 30-35 दिन में तैयार। पैदावार: 20-25 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: नवंबर से फरवरी।

13. रूबी स्टार:

- विवरण: लाल मूली। गोल, चमकदार जड़ें (4-5 सेमी), मसालेदार स्वाद। सलाद और गार्निश के लिए। 25-30 दिन में परिपक्व। पैदावार: 15-20 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अक्टूबर से मार्च।

14. पूसा रेशमी-2:

- विवरण: IARI की उन्नत। सफेद, रेशमी जड़ें (20-25 सेमी), गर्मी-सहनशील, हल्की मिठास। 35-40 दिन में तैयार। पैदावार: 25-30 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: मार्च से सितंबर।

15. एफ-1 डायमंड:

- विवरण: निजी हाइब्रिड। सफेद, बेलनाकार जड़ें (25-30 सेमी), ठंड और मानसून में अच्छी। 40-45 दिन में परिपक्व। पैदावार: 30-35 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अगस्त से दिसंबर।

16. रेड मून:

- विवरण: नई लाल मूली। गोल, गहरे लाल जड़ें (4-6 सेमी), कुरकुरी और रसीली। सलाद के लिए। 25-35 दिन में तैयार। पैदावार: 15-20 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अक्टूबर से मार्च।

17. सुपर चंद्रमा:

- विवरण: हाइब्रिड, सफेद जड़ें (20-25 सेमी), मुलायम और कम तीखी। गर्मी में अनुकूल। 35-40 दिन में परिपक्व। पैदावार: 25-30 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: मार्च से अगस्त।

18. ग्लोबल रेड:

- विवरण: लाल मूली, गोल जड़ें (5-6 सेमी), मीठी और हल्की तीखी। निर्यात मांग। 25-30 दिन में तैयार। पैदावार: 12-18 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अक्टूबर से फरवरी।

19. हाइब्रिड सिल्वर:

- विवरण: निजी हाइब्रिड। चमकदार सफेद जड़ें (25-30 सेमी), ठंड में बेहतर। रोग-प्रतिरोधी। 40-50 दिन में परिपक्व। पैदावार: 30-35 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अक्टूबर से जनवरी।

20. रश्मि व्हाइट:

- विवरण: नई हाइब्रिड। सफेद, लंबी जड़ें (30-35 सेमी), कुरकुरी। सर्दी और मानसून में उपयुक्त। 40-45 दिन में तैयार। पैदावार: 30-40 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अगस्त से जनवरी।
- बुवाई का समय पश्चिमी उत्तर प्रदेश की जलवायु (गर्मी: 30-40°C, सर्दी: 5-15°C, मानसून: उच्च आर्द्रता) को ध्यान में रखकर दिया गया है।
- कुछ किस्में (जैसे पूसा मृदुला, पूसा रेशमी-2) गर्मी-सहनशील हैं, जबकि अन्य (जैसे स्नो व्हाइट, कावेरी व्हाइट) ठंडी जलवायु के लिए उपयुक्त हैं।
- लाल मूली किस्में (रेड प्रिंस, रेड डायमंड, रूबी स्टार) सलाद और निर्यात के लिए लोकप्रिय हैं और ठंडी जलवायु में बेहतर हैं।

गुलमेंहदी क्या होती है? इसकी खेती, उपयोग और पैदावार के बारे में जानकारी

गुलमेंहदी एक जड़ी-बूटी का पौधा है, जिसको औषधीय और मसाले के रूप में इस्तेमाल करने के लिए उगाया जाता हैं। इसको अंग्रेजी में Rosemary भी कहा जाता हैं। हमारे देश में भी इसकी खेती कई स्थानों पर की जाती हैं। गुलमेंहदी का उपयोग मास, सुप और विभिन्न व्यंजनों में मसाले

के रूप में किया जाता हैं। आज के इस लेख में हम आपको गुलमेंहदी से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

गुलमेंहदी क्या होती है?

गुलमेंहदी या Rosemary एक सुगन्धित जड़ी-बूटीक पौधा है, इसका वैज्ञानिक नाम Rosmarinus officinalis हैं, जो की पुदीने के परिवार से संबंधित है। इसका उपयोग कई चीजों में किया जाता हैं सबसे ज्यादा इसको सौंदर्य और त्वचा के लिए इस्तेमाल किया जाता हैं। इससे इत्र, साबुन, और अन्य सुगंधित उत्पाद भी बनाए जाते हैं।

गुलमेंहदी के उपयोग

गुलमेंहदी एक बहुत उपयोगी पौधा जिसको कई चीजों में इस्तेमाल किया जाता हैं जो की निम्नलिखित हैं:

औषधीय गुण

इसकी सुगंध और स्वाद अद्भुत हैं, और यह स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा है।

गुलमेंहदी को माउथ फ्रेशनर के रूप में, चिकित्सीय सहायता के लिए इसका उपयोग सिरदर्द, पेट के दर्द, और जोड़ों के दर्द के इलाज में किया जाता है।

गुलमेंहदी में एंटीऑक्सीडेंट और सूजन-रोधी गुण होते हैं, जो की पाचन सुधारने, और तनाव कम करने में सहायक होते हैं।

खाद्य सामग्री

गुलमेंहदी आम तौर पर मांस, सूप और कई अन्य व्यंजनों में मसाला होता है। ताजा और सूखा दोनों इसका उपयोग होता है।

सौंदर्य और त्वचा के लिए

गुलमेंहदी का तेल भी निकलता हैं जो की बालों और त्वचा के लिए फायदेमंद माना जाता है। यह बालों के विकास को बढ़ाता है और त्वचा को चमकदार बनाता है।

इसके साथ ही इसका उपयोग इत्र, साबुन, और अन्य सुगंधित उत्पादों को बनने के लिए भी किया जाता हैं।

गुलमेंहदी की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

गुलमेंहदी की खेती के लिए 30 डिग्री सेल्सियस से नीचे ठंडी सर्दी और हल्की गर्मी की आवश्यकता होती है। समशीतोष्ण जलवायु क्षेत्र गुलमेंहदी की खेती के लिए उपयुक्त हैं।

गुलमेंहदी खेती के लिए हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू कश्मीर जैसे पहाड़ी राज्यों का वातावरण अनुकूल है। बुवाई के दौरान ठीक तापमान 14°-15° सेल्सीयस होना चाहिए।

गुलमेंहदी के लिए 5.5 से 7.0 pH वाली अच्छी जल निकास वाली दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है।

जब पीएच 5.0 से नीचे हो, तो डोलोमाइट 2.5 टन/हेक्टेयर की दर से डालना चाहिए और मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिए।

बुवाई के लिए भूमि की तैयारी

भूमि को दो बार अच्छी तरह से जोत कर भुरभुरा बना लें। आखिरी जुताई के समय 2 टन प्रति हेक्टेयर अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद और 500 किलोग्राम नीम की खली डालकर अच्छी तरह मिला देना चाहिए।

सुविधाजनक आकार की 30 से.मी. ऊंचाई, 1.5 मीटर चौड़ाई और लंबाई की क्यारियां तैयार करें।

रोपण के समय 5 किलोग्राम एज़ोस्पिरिलम और 5 किलोग्राम फॉस्फोबैक्टीरियम को मिट्टी में डालकर अच्छी तरह मिला देना चाहिए।

कटिंग की तैयारी और रोपण प्रक्रिया

1. कटिंग का चयन: फूल आने से पहले 10-15 सेंटीमीटर लंबाई की अर्ध-दृढ़ लकड़ी से कटिंग लें। ऊपर के कुछ पत्तों को छोड़ दें, जबकि बाकी पत्ते रोपण से पहले हटा दें।
2. रोपण मिश्रण: कटिंग को जड़ उगाने के लिए पॉलिथीन बैग में मिट्टी, रेत और पत्ती के खाद के मिश्रण में लगाएं।
3. घोल का उपयोग: रोपण से पहले, कटिंग को

- 3% पंचगव्य घोल या 10% सीपीपी घोल में 20 मिनट तक भिगोया जा सकता है। इससे कटिंग के जड़ने की संभावना बढ़ जाती है।
- सुरक्षा और पानी देना: कटिंग वाले थैलों को छाया में रखें और उन्हें दिन में दो बार पानी दें।
- जड़ निकलने का समय: जड़ों वाली कटिंग 60 दिनों के अंदर मुख्य खेत में रोपाई के लिए तैयार हो जाएंगी।

रोपण का तरीका

गुलमेंहदी की खेती करते समय अच्छे और स्वस्थ्य बीजों का उपयोग करें, जिससे फसल को कोई नुकसान नहीं होगा। पौधों को पहले बीज द्वारा नर्सरी में तैयार कर ले। जब पौधे खेत में रोपने योग्य हो जाता है, तो उसे 45 X 45 से.मी. की दूरी पर रोपना चाहिए। पौधे को नर्सरी में तैयार करने के बाद, मिट्टी में आवश्यक खाद मिलने के बाद बीज बोया जाना चाहिए।

कटाई और पैदावार

बुवाई के बाद, गुलमेंहदी का पौधा कई साल तक उपज देता रहता है। बुआई के चार महीने बाद पचास प्रतिशत फूल आने पर कोमल हिस्से को काटकर उपज ले सकते है, हरे पत्तो की उपज 12-13 t/ha तक ले सकते हैं। फसल से 2.5 क्विंटल हेक्टेयर सुखी पत्तियों की उपज ले सकते है।

मिर्च की उन्नत किस्मों से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी

भारत में मिर्च की खेती व्यापक रूप से की जाती है, भारत की हर रसोई में मिर्च का उपयोग किया जाता है। मिर्ची में तीखापन एक अलकानोइड से होता है। मिर्च पूरे देश में उगाई जाती है और हर भारतीय व्यंजन में एक महत्वपूर्ण सब्जी और मसाला है। हरी मिर्च, साबुत सूखी मिर्च, मिर्च पाउडर, मिर्च पेस्ट, मिर्च सॉस, मिर्च ओलियोरेसिन और मिश्रित करी पाउडर सब तीखे रूप हैं। भारत में कई प्रकार की मिर्च उगाई जाती है। इस लेख में हम आपको मिर्च की उन्नत किस्मों के बारे में जानकारी देंगे।

मिर्च की उन्नत किस्में

भारत में मिर्च का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाता हैं, मिर्च की खेती के लिए आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती हैं, मिर्च की खेती के लिए 15 से 35 डिग्री तापमान की आवश्यकता होती हैं। भारत में मिर्च की कई किस्में पाई जाती हैं जो की अलग - अलग अनुसंधान संस्थानों द्वारा लॉन्च की गयी हैं, मिर्च की उन्नत किस्में निम्नलिखित दी गयी हैं -

अर्का मेघना

यह मिर्च की उच्च उत्पादन देने वाली F1 संकर किस्म हैं, इस किस्म की मिर्च लंबी 10 सेमी तक होते हैं। यह मिर्च की जल्दी पकने वाली किस्म है, जो प्रतिरोपण के 25 दिनों बाद 50% फूल विकसित कर लेती है।
मिर्च ये किस्म 150 से 160 दिनों तक की होती है। ये किस्म चूर्णिल आसिता व वायरस के प्रति सहनशील होती है।

पुसा ज्वाला

इस किस्म से हरी मिर्च की उपज 7.5 टन/हेक्टेयर होती है। पौधे छोटे और झाड़ीदार होते हैं। फल 9-10 सेमी लंबे, हल्के हरे, पतले, घुमावदार और मध्यम तीखे होते हैं। यह किस्म मोज़ेक रोग के प्रति सहनशील है।

अर्का श्वेता

अर्का श्वेता भी मिर्च की उन्नत किस्म हैं। इस प्रकार की मिर्च की मोटाई 1.2 से 1.5 सेमी है और लंबाई लगभग 13 सेमी है। यह विषाणु रोग प्रतिरोधी किस्म है। इस किस्म से प्रति हैक्टेयर 28–30 हरी मिर्च और 4-5 टन लाल मिर्च मिल सकते हैं।

काशी सुर्ख

इस किस्म/प्रजाति के पौधे सीधे होते हैं और 70 से 100 सेमी मोटे होते हैं। फल 10–12 सेमी लंबे, हल्के हरे रंग के, सीधे और 1.5–1.8 सेमी मोटे होते हैं। पहली तुड़ाई पौध रोपण के पच्चीस से पच्चीस दिनों बाद मिलती है। यह लाल और सूखे फल दोनों के लिए अच्छा है।
काशी एक सुर्ख संकर किस्म है। इस किस्म से प्रति हैक्टेयर 20 से 25 टन सूखी लाल मिर्च और 3 से 4 टन हरी मिर्च उत्पादित हो सकते हैं।

₹10 लाख से कम में आने वाले बेस्ट 4 मैसी फर्ग्यूसन ट्रैक्टर

₹10 लाख से कम में आने वाले बेस्ट 4 मैसी फर्ग्यूसन ट्रैक्टर - जानें, कीमत और स्पेसिफिकेशन्स
खेती के लिए ट्रैक्टर खरीदते समय किसान सबसे पहले उसकी पावर, इंजन क्षमता, माइलेज, हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता, ट्रांसमिशन, फीचर्स और कीमत पर ध्यान देते हैं। वहीं, अलग-अलग किसानों की जरूरत और खेती का क्षेत्र अलग होने के कारण हर किसान के लिए एक ही ट्रैक्टर उपयुक्त नहीं होता। कुछ किसानों को छोटे और मध्यम खेतों के लिए कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर की जरूरत होती है, जबकि कुछ किसान भारी कृषि उपकरणों के संचालन के लिए अधिक पावर वाला ट्रैक्टर पसंद करते हैं। अगर आपका बजट ₹10 लाख से कम है और आप मैसी फर्ग्यूसन के ट्रैक्टर की तलाश कर रहे हैं, तो कंपनी के पोर्टफोलियो में कई ऐसे मॉडल मौजूद हैं जो अलग-अलग कृषि कार्यों के लिए उपयोगी हो सकते हैं। इस लेख में हम मैसी फर्ग्यूसन 241 4WD, मैसी फर्ग्यूसन 241 DI डायनाट्रैक, मैसी फर्ग्यूसन 7250 DI Power Up और मैसी फर्ग्यूसन 245 DI के बारे में विस्तार से जानेंगे। इन सभी ट्रैक्टरों की कीमत ₹10 लाख से कम है, लेकिन पावर, ट्रांसमिशन,

हाइड्रोलिक्स और अन्य फीचर्स के मामले में इनमें काफी अंतर है।

1. मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई 4WD

₹10 लाख से कम कीमत में अगर आप 4WD ट्रैक्टर की तलाश कर रहे हैं, तो मैसी फर्ग्यूसन 241 4WD एक विकल्प हो सकता है। यह 42 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसमें 3 सिलेंडर और 2500 CC का Water Cooled इंजन दिया गया है। इसकी PTO पावर 35.7 HP है, जिससे किसान उपयुक्त PTO-संचालित कृषि उपकरणों के साथ काम कर सकते हैं। इंजन में Dry Air Cleaner दिया गया है, जो धूल-मिट्टी वाले कृषि वातावरण में इंजन तक जाने वाली हवा को साफ रखने में मदद करता है।

मैसी फर्ग्यूसन 241di 4WD में Standard Dual Clutch के साथ Partial Constant Mesh ट्रांसमिशन दिया गया है। इसमें 8 Forward + 2 Reverse गियर मिलते हैं। इसकी अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड 29.5 किलोमीटर प्रति घंटा और रिवर्स स्पीड 10.8 किलोमीटर प्रति घंटा बताई गई है। ट्रैक्टर में 12 V 80 Ah बैटरी और 12 V 36 A अल्टरनेटर दिया गया है। ब्रेकिंग के लिए Multi Disc Oil Immersed Brakes और स्टीयरिंग के लिए Power Steering मिलता है। PTO की बात करें तो इसमें Live, Six-splined Shaft PTO दिया गया है और PTO 540 RPM पर 1500 इंजन RPM में काम करता है। इसका फ्यूल टैंक 47 लीटर का है। ट्रैक्टर का वजन 2260 KG, व्हीलबेस 1970 MM, लंबाई 3369 MM और चौड़ाई 1698 MM है। इसका ग्राउंड क्लीयरेंस 380 MM दिया गया है। हाइड्रोलिक्स में 1700 KG की लिफ्टिंग क्षमता और Oil Immersed Hydraulic Pump मिलता है, जिससे यह उपयुक्त कृषि उपकरणों के संचालन के लिए उपयोगी बनता है। इसमें आगे 8.30 x 20 और पीछे 13.6 x 28 साइज के टायर दिए गए हैं। 4WD ड्राइव होने के कारण यह उन किसानों के लिए उपयोगी हो सकता है जिन्हें खेत में अधिक ट्रैक्शन की आवश्यकता होती है। मैसी फर्ग्यूसन 241 4WD की कीमत ₹8.65 लाख से ₹9.00 लाख के बीच दी गई है।

2. मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई डायनाट्रैक

मैसी फर्ग्यूसन 241 DI डायनाट्रैक भी 42 HP श्रेणी में आने वाला ट्रैक्टर है, लेकिन इसके स्पेसिफिकेशन्स इसे 241 4WD से अलग बनाते हैं। इसमें 3 सिलेंडर वाला 2500 CC Water Cooled इंजन दिया गया है और इसकी PTO पावर 38 HP है। इसमें Wet Type एयर फिल्टर दिया गया है। इस पावर के कारण यह जुताई, बुवाई, ढुलाई और उपयुक्त कृषि उपकरणों के संचालन जैसे विभिन्न कार्यों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

ट्रांसमिशन की बात करें तो मैसी फर्ग्यूसन 241 DI डायनाट्रैक में Dual Clutch और Side Shift-Constant Mesh Transmission दिया गया है। इसमें 12 Forward + 12 Reverse गियर मिलते हैं, जो अलग-अलग कृषि कार्यों में गति का बेहतर विकल्प प्रदान करते हैं। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 31.8 किलोमीटर प्रति घंटा है। इसमें 12 V 75 Ah बैटरी और 12 V 36 A अल्टरनेटर दिया गया है। ब्रेकिंग के लिए Oil Immersed Brakes और स्टीयरिंग में Power Steering मिलता है।

इस ट्रैक्टर में Quadra PTO दिया गया है और PTO स्पीड 540 RPM है। इसका फ्यूल टैंक 55 लीटर का है। डायमेंशन की बात करें तो इसका वजन 1880 KG, व्हीलबेस 1935 MM और कुल लंबाई 3560 MM है। इसकी चौड़ाई 1650 MM दी गई है। हाइड्रोलिक सिस्टम में 2050 KG की लिफ्टिंग क्षमता मिलती है और Draft, Position तथा Response Control की सुविधा दी गई है।

टायरों की बात करें तो इसमें आगे 6.50 x 16 और पीछे 13.6 x 28 साइज के टायर दिए गए हैं। 2050 KG की लिफ्टिंग क्षमता और 12+12 गियर इसे अलग-अलग कृषि कार्यों के लिए उपयोगी बनाते हैं। मैसी फर्ग्यूसन 241 DI डायनाट्रैक की कीमत ₹7.78 लाख से ₹8.10 लाख के बीच दी गई है।

3. मैसी फर्ग्यूसन 7250 डीआई पावर अप

अगर आपका बजट ₹10 लाख से कम है और आप 50 HP कैटेगरी का ट्रैक्टर चाहते हैं, तो मैसी फर्ग्यूसन 7250 DI Power Up एक विकल्प हो सकता है। यह 3 सिलेंडर वाले 2700 CC इंजन के साथ आता है। इसका इंजन 2100 RPM पर रेटेड है और इसकी PTO पावर 44 HP दी गई है। इंजन को Water Cooled सिस्टम से ठंडा किया जाता है और इसमें Dry Air Cleaner दिया गया है।

मैसी फर्ग्यूसन 7250 DI Power Up में Dual Clutch और Constant Mesh Transmission दिया गया है। इसमें 8 Forward + 2 Reverse गियर मिलते हैं। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 34.87 किलोमीटर प्रति घंटा और रिवर्स स्पीड 11.4 किलोमीटर प्रति घंटा बताई गई है। ट्रैक्टर में 12 V 75 Ah बैटरी और 12 V 36 A अल्टरनेटर दिया गया है। ब्रेकिंग के लिए Oil Immersed Brakes और स्टीयरिंग में Mechanical/Power Steering का विकल्प मिलता है।

PTO सिस्टम में RPTO दिया गया है, जो 540 RPM @ 1735 ERPM पर काम करता है। इसमें 60 लीटर का फ्यूल टैंक दिया गया है, जिससे लंबे समय तक चलने वाले कृषि कार्यों में बार-बार ईंधन भरवाने की जरूरत कम हो सकती है। ट्रैक्टर का वजन 2110 KG, व्हीलबेस 1930 MM, लंबाई 3610 MM और चौड़ाई 1747 MM है। इसका ग्राउंड क्लीयरेंस 430 MM दिया गया है।

हाइड्रोलिक सिस्टम की बात करें तो इसमें 1800 KG की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। इसमें Draft, Position और Response Control के साथ Cat 1 और Cat 2 Balls वाले Combi Ball Links दिए गए हैं। टायरों में आगे 6.00 x 16 या 7.5 x 16 और पीछे 13.6 x 28 या 14.9 x 28 के विकल्प दिए गए हैं। मैसी फर्ग्यूसन 7250 DI Power Up की कीमत ₹8.08 लाख से ₹8.41 लाख के बीच दी गई है।

4. मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई

मैसी फर्ग्यूसन 245 DI इस लिस्ट में 50 HP श्रेणी का एक और ट्रैक्टर है। इसमें 3 सिलेंडर वाला 2700 CC Water Cooled इंजन दिया गया है। इसकी इंजन रेटेड स्पीड 1790 RPM है और PTO पावर 42.5 HP दी गई है। इस पावर के कारण किसान इसका इस्तेमाल खेती के कई सामान्य और भारी कार्यों के लिए कर सकते हैं।

ट्रांसमिशन में Dual Clutch के साथ Partial Constant Mesh/Sliding Mesh सिस्टम दिया गया है। इसमें 8 Forward + 2 Reverse गियर मिलते हैं। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 34.2 किलोमीटर प्रति घंटा और रिवर्स स्पीड 15.6 किलोमीटर प्रति घंटा है। ट्रैक्टर में 12 V 75 Ah बैटरी और 12 V 36 A अल्टरनेटर दिया गया है। ब्रेकिंग के लिए Sealed Dry Disc Brakes दिए गए हैं, जबकि स्टीयरिंग में Mechanical/Power Steering का विकल्प मिलता है।

मैसी फर्ग्यूसन 245 DI में Live, Six-splined Shaft PTO दिया गया है, जो 540 RPM @ 1790 ERPM पर काम करता है। इसमें 47 लीटर का फ्यूल टैंक दिया गया है। ट्रैक्टर का वजन 1915 KG, व्हीलबेस 1830 MM, कुल लंबाई 3320 MM और चौड़ाई 1705 MM है। इसका ग्राउंड क्लीयरेंस 360 MM दिया गया है।

हाइड्रोलिक सिस्टम में 1700 KG की लिफ्टिंग क्षमता मिलती है और इसमें Draft Position तथा Response Control Links दिए गए हैं। टायरों में आगे 6.00 x 16 और पीछे 13.6 x 28 साइज के टायर दिए गए हैं। मैसी फर्ग्यूसन 245 DI की कीमत ₹7.59 लाख से ₹7.90 लाख के बीच दी गई है, जिससे यह 50 HP कैटेगरी में अपेक्षाकृत किफायती विकल्प बनता है।

₹10 लाख से कम में कौन-सा मैसी फर्ग्यूसन ट्रैक्टर बेहतर है?

इन चारों ट्रैक्टरों की अपनी-अपनी खासियतें हैं और

असली ताक़त
बेजोड़ काम
ज़बरदस्त कमाई
EICHER 485
45 HP रेंज
EICHER

सही मॉडल का चुनाव किसान की खेती और काम की जरूरत पर निर्भर करता है। अगर किसान को 4WD और बेहतर ट्रैक्शन की जरूरत है, तो मैसी फर्ग्यूसन 241 4WD पर विचार किया जा सकता है। वहीं, 42 HP में अधिक गियर और ज्यादा हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता की जरूरत होने पर 241 DI डायनाट्रैक एक विकल्प हो सकता है।

अगर किसान 50 HP श्रेणी में ट्रैक्टर लेना चाहता है, तो 7250 DI Power Up और 245 DI दोनों पर विचार किया जा सकता है। 7250 DI Power Up में 60 लीटर फ्यूल टैंक, 44 HP PTO और 430 MM ग्राउंड क्लीयरेंस मिलता है, जबकि 245 DI में 42.5 HP PTO और 1700 KG लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। इसलिए किसान को अपने कृषि उपकरण, खेत की स्थिति और काम के प्रकार के अनुसार मॉडल चुनना चाहिए।

इन चारों ट्रैक्टरों में मुख्य अंतर

मैसी फर्ग्यूसन 241 4WD 42 HP का 4WD ट्रैक्टर है और इसकी कीमत ₹8.65 से ₹9.00 लाख है। इसमें 1700 KG हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता मिलती है।

मैसी फर्ग्यूसन 241 DI डायनाट्रैक 42 HP का ट्रैक्टर है, जिसकी कीमत ₹7.78 से ₹8.10 लाख है। इसमें 12 Forward + 12 Reverse गियर और 2050 KG लिफ्टिंग क्षमता मिलती है।

मैसी फर्ग्यूसन 7250 DI Power Up 50 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसकी कीमत ₹8.08 से ₹8.41 लाख है। इसमें 2700 CC इंजन, 44 HP PTO और 1800 KG लिफ्टिंग क्षमता दी गई है।

मैसी फर्ग्यूसन 245 DI भी 50 HP कैटेगरी में आता है और इसकी कीमत ₹7.59 से ₹7.90 लाख है। इसमें 2700 CC इंजन, 42.5 HP PTO और 1700 KG हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता मिलती है।

निष्कर्ष

₹10 लाख से कम कीमत में मैसी फर्ग्यूसन के ये चारों ट्रैक्टर अलग-अलग जरूरतों के हिसाब से उपयोगी हो सकते हैं। 241 4WD उन किसानों के लिए बेहतर विकल्प हो सकता है जिन्हें 4WD ट्रैक्शन की जरूरत है, जबकि 241 DI डायनाट्रैक अपने 12+12 गियर और 2050 KG लिफ्टिंग क्षमता के कारण आकर्षित करता है। दूसरी ओर, 50 HP पावर की जरूरत वाले किसान 7250 DI Power Up और 245 DI में से अपनी जरूरत के अनुसार चुनाव कर सकते हैं।

ट्रैक्टर खरीदने से पहले केवल कीमत और HP पर ध्यान देने के बजाय खेती का क्षेत्र, मिट्टी की स्थिति, इस्तेमाल होने वाले कृषि उपकरण, 2WD/4WD की जरूरत, हाइड्रोलिक क्षमता और स्थानीय डीलर की कीमत को भी ध्यान में रखना चाहिए। इससे किसान अपनी जरूरत के अनुसार सही मैसी फर्ग्यूसन ट्रैक्टर का चुनाव कर सकता है।

महिंद्रा 275 डीआई एक्सपी प्लस: 37 एचपी श्रेणी में बेहतरीन ट्रैक्टर

महिंद्रा 275 डीआई एक्सपी प्लस ट्रैक्टर: कीमत, फीचर्स और परफॉर्मेंस

महिंद्रा 275 डीआई एक्सपी प्लस एक लोकप्रिय 37

एचपी श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसे खेती के विभिन्न कार्यों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इसमें 3 सिलेंडर वाला इंजन दिया गया है, जिसकी सीसी क्षमता 2235 सीसी है। यह इंजन 2100 आरपीएम पर काम करता है और 153 एनएम का अधिकतम टॉर्क प्रदान करता है। ट्रैक्टर में 32.9 पीटीओ एचपी मिलती है, जिससे रोटावेटर, थ्रेशर, कल्टीवेटर और अन्य पीटीओ आधारित कृषि उपकरणों को चलाने में मदद मिलती है। 2WD ड्राइव के साथ यह ट्रैक्टर सामान्य खेती, जुताई, बुवाई, ढुलाई और अन्य कृषि कार्यों के लिए उपयोगी विकल्प है।

महिंद्रा 275 डीआई एक्सपी प्लस इंजन

महिंद्रा 275 डीआई एक्सपी प्लस में 3 सिलेंडर का दमदार इंजन दिया गया है। इसका इंजन 2235 सीसी क्षमता के साथ 37 एचपी की पावर कैटेगरी में आता है। इंजन की रेटेड स्पीड 2100 आरपीएम है और यह 153 एनएम का टॉर्क उत्पन्न करता है। ट्रैक्टर में 3-स्टेज ऑयल बाथ टाइप एयर फिल्टर के साथ प्री-क्लीनर दिया गया है, जो इंजन तक पहुंचने वाली हवा को साफ रखने में सहायता करता है। इसकी 32.9 एचपी पीटीओ पावर विभिन्न कृषि उपकरणों के संचालन के लिए उपयोगी है। इंजन का संयोजन खेती के रोजमर्रा के कामों में अच्छा प्रदर्शन देने के लिए किया गया है।

ट्रांसमिशन और गियर बॉक्स

इस ट्रैक्टर में कांस्टेंट मेश ट्रांसमिशन दिया गया है। इसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर मिलते हैं, जिससे किसान आवश्यकता के अनुसार अलग-अलग कार्यों के लिए उपयुक्त गति का चयन कर सकते हैं। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 2.9 से 29.6 किलोमीटर प्रति घंटा और रिवर्स स्पीड 4.1 से 11.8 किलोमीटर प्रति घंटा तक बताई गई है। इसमें सिंगल क्लच दिया जाता है, जबकि ड्यूल क्लच का विकल्प भी उपलब्ध है। अलग-अलग कृषि उपकरणों और खेत की परिस्थितियों के अनुसार गियर का चयन करके ट्रैक्टर का प्रभावी उपयोग किया जा सकता है।

ब्रेक और स्टीयरिंग सिस्टम

महिंद्रा 275 डीआई एक्सपी प्लस में ऑयल इमर्स्ड ब्रेक दिए गए हैं। ये ब्रेक ट्रैक्टर को नियंत्रित करने और आवश्यकता पड़ने पर सुरक्षित रूप से रोकने में मदद करते हैं। स्टीयरिंग की बात करें तो इसमें मैकेनिकल स्टीयरिंग दिया गया है, जबकि पावर स्टीयरिंग का विकल्प भी उपलब्ध है। पावर स्टीयरिंग विकल्प लंबे समय तक ट्रैक्टर चलाने वाले किसानों के लिए उपयोगी हो सकता है, क्योंकि इससे स्टीयरिंग को मोड़ने में अपेक्षाकृत कम मेहनत लगती है। इस तरह ब्रेक और स्टीयरिंग सिस्टम ट्रैक्टर के नियंत्रण को बेहतर बनाने में योगदान देते हैं।

पीटीओ और हाइड्रोलिक्स

महिंद्रा 275 डीआई एक्सपी प्लस में 6-स्प्लाइन पीटीओ दिया गया है, जिसकी गति 540 आरपीएम @ 2100 इंजन आरपीएम है। पीटीओ की मदद से रोटावेटर, थ्रेशर, रीपर और अन्य पीटीओ संचालित उपकरणों का इस्तेमाल किया जा सकता है। ट्रैक्टर की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता 1500 किलोग्राम है। यह क्षमता विभिन्न कृषि उपकरणों को उठाने और उनके साथ काम करने में उपयोगी है। किसान अपनी खेती की जरूरत के अनुसार अलग-अलग उपकरणों का इस्तेमाल करके ट्रैक्टर की कार्यक्षमता का लाभ उठा सकते हैं।

फ्यूल टैंक और पहिए

इस ट्रैक्टर में 50 लीटर क्षमता का फ्यूल टैंक दिया गया है। पर्याप्त क्षमता वाला फ्यूल टैंक खेत में लंबे समय तक काम करने के दौरान बार-बार ईंधन भराने की आवश्यकता को कम करने में मदद कर सकता है। यह ट्रैक्टर 2WD ड्राइव सिस्टम के साथ आता है। इसके आगे के टायर 6.00 X 16 और पीछे के टायर 13.6 X 28 आकार के हैं। इन पहियों का संयोजन खेती और सामान्य कृषि कार्यों के लिए ट्रैक्टर को आवश्यक पकड़ और स्थिरता प्रदान करने में मदद करता है।

वजन, व्हीलबेस और वारंटी

महिंद्रा 275 डीआई एक्सपी प्लस का कुल वजन 1800 किलोग्राम बताया गया है और इसका व्हीलबेस 1880 मिमी है। इसका डिजाइन खेती के विभिन्न कार्यों को ध्यान में रखकर किया गया है। ट्रैक्टर का 2WD सिस्टम सामान्य कृषि कार्यों में उपयोग के लिए उपयुक्त है। कंपनी की ओर से इस मॉडल पर 6 वर्ष की वारंटी दी गई है, जो खरीददारों के लिए महत्वपूर्ण विशेषता हो सकती है। वारंटी की शर्तें और कवरेज मॉडल तथा कंपनी की लागू नीतियों के अनुसार हो सकते हैं, इसलिए खरीद से पहले अधिकृत डीलर से इसकी पुष्टि करना उचित है।

महिंद्रा 275 डीआई एक्सपी प्लस की कीमत

भारत में महिंद्रा 275 डीआई एक्सपी प्लस की बताई गई एक्स-शोरूम कीमत ₹6.05 लाख से ₹6.30 लाख के बीच है। वास्तविक कीमत राज्य, डीलर, टैक्स, बीमा, मॉडल वेरिएंट और अन्य शुल्कों के आधार पर अलग-अलग हो सकती है। 37 एचपी श्रेणी में आने वाला यह ट्रैक्टर 32.9 पीटीओ एचपी, 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियर, 1500 किलोग्राम हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता, 50 लीटर फ्यूल टैंक और 6 वर्ष की वारंटी जैसी सुविधाओं के साथ आता है। किसानों के लिए यह खेती, जुताई, बुवाई, ढुलाई और पीटीओ आधारित उपकरणों के संचालन में उपयोगी विकल्प हो सकता है।

सोनालीका डीआई 47 RX: जुताई, बुवाई और ढुलाई के लिए बेस्ट ट्रैक्टर

सोनालीका डीआई 47 RX: 50 एचपी श्रेणी में दमदार ट्रैक्टर

सोनालीका ट्रैक्टर्स भारत के प्रमुख कृषि मशीनरी ब्रांडों में शामिल है, जो अलग-अलग कृषि जरूरतों के अनुसार विभिन्न हॉर्सपावर श्रेणियों में ट्रैक्टर उपलब्ध कराता है। कंपनी के ट्रैक्टरों में खेती के सामान्य कार्यों के साथ-साथ जुताई, बुवाई, रोटावेटर, ढुलाई और अन्य कृषि उपकरणों के साथ काम करने के लिए अलग-अलग फीचर्स दिए जाते हैं। सोनालीका DI 47 RX भी इसी श्रेणी का एक ट्रैक्टर है, जिसे 50 HP श्रेणी में रखा गया है। इसमें 3 सिलेंडर वाला 3067 cc इंजन, 2100 RPM की इंजन स्पीड और 40.92 HP PTO पावर दी गई है।

सोनालीका DI 47 RX का इंजन और परफॉर्मेंस

सोनालीका DI 47 RX में 3 सिलेंडर वाला 3067

cc इंजन दिया गया है, जो 2100 RPM पर काम करता है। यह ट्रैक्टर 50 HP श्रेणी में आता है और इसमें 40.92 HP PTO पावर दी गई है। इंजन को Water Cooled सिस्टम से ठंडा किया जाता है, जबकि इसमें Dry Type एयर फिल्टर दिया गया है। 50 HP श्रेणी की पावर के कारण यह ट्रैक्टर जुताई, बुवाई, रोटावेटर, कल्टीवेटर, ट्रॉली और दूसरे कृषि उपकरणों के साथ उपयोग किया जा सकता है। इंजन की क्षमता और PTO पावर ट्रैक्टर को अलग-अलग कृषि कार्यों में उपयोग करने के लिए पर्याप्त पावर प्रदान करने के उद्देश्य से दी गई है। किसान अपनी खेती की जरूरत और इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरण के अनुसार इसकी पावर का उपयोग कर सकते हैं।

ट्रांसमिशन और गियरबॉक्स

सोनालीका DI 47 RX में Constant Mesh with Side Shifter तकनीक वाला ट्रांसमिशन दिया गया है। इसमें Single और Dual Clutch का विकल्प मिलता है, जिससे किसान अपनी आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त क्लच कॉन्फिगरेशन चुन सकते हैं। ट्रैक्टर में 8 Forward + 2 Reverse गियर दिए गए हैं। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 37.80 kmph और रिवर्स स्पीड 12.39 kmph तक बताई गई है। अलग-अलग गियर विकल्प खेती के दौरान विभिन्न कार्यों के लिए उपयुक्त गति चुनने में मदद करते हैं। उदाहरण के लिए खेत में जुताई और दूसरे भारी कार्यों के दौरान कम गति उपयोगी होती है, जबकि ट्रॉली या परिवहन जैसे कार्यों में अधिक गति की जरूरत हो सकती है। इसमें 12 V 75 Ah बैटरी और 12 V 36 A अल्टरनेटर भी दिया गया है।

ब्रेक और स्टीयरिंग

सुरक्षित संचालन के लिए सोनालीका DI 47 RX में Dry Disc Brakes और Oil Immersed Brakes का विकल्प दिया गया है। Oil Immersed Brakes लंबे समय तक चलने वाले कृषि कार्यों और भारी उपकरणों के साथ काम करते समय उपयोगी हो सकते हैं। स्टीयरिंग की बात करें तो इसमें Mechanical/Power Steering का विकल्प मिलता है। Power Steering ट्रैक्टर को मोड़ने और खेत में दिशा बदलने के दौरान चालक के प्रयास को कम करने में मदद करता है। वहीं Mechanical Steering का विकल्प भी उपलब्ध है। खेत की स्थिति, उपयोग और किसान की पसंद के अनुसार स्टीयरिंग का विकल्प चुना जा सकता है।

PTO और कृषि उपकरणों के साथ उपयोग

सोनालीका DI 47 RX में 6 Splines PTO दिया गया है और इसकी PTO स्पीड 540 RPM है। PTO ट्रैक्टर का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है, क्योंकि इसके माध्यम से रोटावेटर, थ्रेशर, रीपर, स्प्रेयर और अन्य PTO आधारित कृषि उपकरणों को चलाया जा सकता है। ट्रैक्टर में 40.92 HP PTO पावर दी गई है, जो विभिन्न कृषि उपकरणों के संचालन के लिए उपयोगी हो सकती है। किसान को किसी भी उपकरण को ट्रैक्टर के साथ इस्तेमाल करने से पहले उपकरण की पावर आवश्यकता और निर्माता द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार संगतता की जांच करनी चाहिए।

65 लीटर का फ्यूल टैंक

सोनालीका **DI 47 RX** में **56** लीटर की फ्यूल टैंक क्षमता दी गई है। बड़ी फ्यूल टैंक क्षमता का फायदा यह है कि लंबे समय तक चलने वाले कृषि कार्यों के दौरान बार-बार ईंधन भरवाने की जरूरत कम हो सकती है। हालांकि वास्तविक ईंधन खपत खेत की मिट्टी, ट्रैक्टर पर लोड, कृषि उपकरण, काम की स्थिति और ड्राइविंग तरीके पर निर्भर करती है। इसलिए केवल फ्यूल टैंक की क्षमता के आधार पर माइलेज का अनुमान नहीं लगाया जाना चाहिए। **65** लीटर का टैंक उन किसानों के लिए उपयोगी हो सकता है जो ट्रैक्टर से लगातार कई घंटे तक कृषि कार्य करवाते हैं।

हाइड्रोलिक्स और लिफ्टिंग क्षमता

हाइड्रोलिक सिस्टम के मामले में सोनालीका DI 47 RX में 1600 Kg की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। इसके साथ Automatic Depth and Draft Control भी मिलता है। यह सिस्टम कृषि उपकरण की गहराई और ड्राफ्ट को नियंत्रित करने में मदद करता है, जिससे खेत में उपकरण के संचालन को अधिक व्यवस्थित तरीके से किया जा सकता है। ट्रैक्टर की हाइड्रोलिक क्षमता को देखते हुए इसका उपयोग विभिन्न 3-पॉइंट लिंकज वाले कृषि उपकरणों के साथ किया जा सकता है। हालांकि किसी विशेष उपकरण को खरीदने या उपयोग करने से पहले उसकी कुल वजन क्षमता और ट्रैक्टर के हाइड्रोलिक सिस्टम के साथ उसकी संगतता की जांच करना जरूरी है।

डायमेंशन, वजन और ग्राउंड क्लीयरेंस

सोनालीका DI 47 RX का कुल वजन 2060 किलोग्राम दिया गया है। इसका व्हीलबेस 2080 mm और ग्राउंड क्लीयरेंस 425 mm है। ट्रैक्टर का वजन और व्हीलबेस इसके स्थिर संचालन तथा खेत में विभिन्न उपकरणों के साथ काम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 425 mm ग्राउंड क्लीयरेंस होने से फसल वाली परिस्थितियों में ट्रैक्टर के नीचे पर्याप्त जगह बनी रहती है। हालांकि वास्तविक उपयोग में खेत की फसल, मिट्टी और रास्ते की स्थिति के अनुसार ट्रैक्टर का प्रदर्शन अलग-अलग हो सकता है।

टायर और ट्रैक्शन

सोनालीका DI 47 RX में फ्रंट टायर के लिए 7.5 x 16 और 6.0 x 16 के विकल्प दिए गए हैं, जबकि रियर में 14.9 x 28 और 13.6 x 28 टायर के विकल्प मिलते हैं। रियर टायर ट्रैक्टर के जमीन पर संपर्क और ट्रैक्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग टायर विकल्प किसानों को अपनी खेती और उपयोग की परिस्थितियों के अनुसार कॉन्फिगरेशन चुनने की सुविधा देते हैं। खेत की मिट्टी, ट्रैक्टर का उपयोग और कृषि उपकरणों के आधार पर सही टायर का चयन किया जा सकता है।

सोनालीका DI 47 RX की कीमत और वारंटी?

दिए गए विवरण के अनुसार सोनालीका DI 47 RX की कीमत ₹7.45 लाख से ₹7.76 लाख तक है। वास्तविक एक्स-शोरूम या ऑन-रोड कीमत राज्य, डीलर, टैक्स, बीमा, आरटीओ और चुने गए वेरिएंट के आधार पर अलग हो सकती है। इस ट्रैक्टर पर 2000 घंटे या 2 वर्ष की वारंटी दी गई है। ट्रैक्टर खरीदने से पहले किसान को स्थानीय अधिकृत डीलर से वर्तमान कीमत, उपलब्ध वेरिएंट, वारंटी की शर्तों और सर्विस संबंधी जानकारी जरूर प्राप्त करनी चाहिए।

भारत में 7 बेहतरीन ट्रैक्टर - परफॉर्मेंस और भरोसे के लिए सबसे अच्छे विकल्प

भारत में खेती के लिए ट्रैक्टर किसानों की सबसे महत्वपूर्ण कृषि मशीनों में से एक है। जुताई, बुवाई, ढुलाई, रोटावेटर चलाने, थ्रेशिंग और अन्य कृषि कार्यों में ट्रैक्टर का उपयोग बढ़ने के साथ किसान अब केवल हॉर्सपावर ही नहीं, बल्कि इंजन क्षमता,

टॉर्क, ट्रांसमिशन, हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता, PTO, माइलेज, आराम और कीमत जैसे कई पहलुओं को ध्यान में रखकर ट्रैक्टर का चयन करते हैं। बाजार में अलग-अलग HP श्रेणियों और फीचर्स के साथ कई कंपनियों के ट्रैक्टर उपलब्ध हैं, जिससे किसानों के लिए अपनी जरूरत के अनुसार सही मॉडल चुनना कभी-कभी चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

भारत में 7 बेहतरीन ट्रैक्टर - कीमत और स्पेसिफिकेशन

इस लेख में भारत में उपलब्ध 7 ट्रैक्टरों—सोनालीका टाइगर DI 55, महिंद्रा 475 DI, मैसी फर्ग्यूसन 241 DI महा शक्ति, स्वराज 744 FE, जॉन डियर 5105, पॉवर ट्रैक यूरो 439 और न्यू हॉलैंड 3630 TX स्पेशल एडिशन—की जानकारी दी गई है। इन ट्रैक्टरों में अलग-अलग इंजन क्षमता, हॉर्सपावर, गियरबॉक्स, हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता और कीमत देखने को मिलती है। इसलिए किसान अपने खेत का आकार, मिट्टी की स्थिति, खेती के कार्य, उपयोग किए जाने वाले कृषि उपकरण और बजट को ध्यान में रखकर इनमें से उपयुक्त ट्रैक्टर का चुनाव कर सकते हैं।

1. सोनालीका 55 टाइगर

सोनालीका टाइगर 55 एक दमदार 55 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसे खेती के विभिन्न कार्यों में बेहतर पावर और मजबूत प्रदर्शन के लिए तैयार किया गया है। इसमें 4 सिलेंडर वाला 4087 cc इंजन दिया गया है, जो 2000 RPM पर काम करता है और अधिकतम 255 Nm टॉर्क पैदा करता है। इसका इंजन Coolant Cooled तकनीक और Dry Type एयर फिल्टर के साथ आता है, जिससे लंबे समय तक खेती के काम में इंजन के प्रदर्शन को बनाए रखने में मदद मिलती है। ट्रैक्टर में Independent क्लच तथा Constant Mesh with Side Shifter ट्रांसमिशन दिया गया है। इसमें 12 Forward + 12 Reverse गियर हैं और इसकी अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड 39 kmph बताई गई है। ब्रेकिंग के लिए Multi Disc Oil Immersed Brakes और आसान संचालन के लिए Power Steering मिलता है। इसका PTO 540/Reverse PTO है और PTO स्पीड 540 RPM है। सोनालीका टाइगर 55 में 65 लीटर का बड़ा फ्यूल टैंक तथा 2200 किलोग्राम की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। इसमें 7.50 x 16/6.50 x 20 फ्रंट और 16.9 x 28 रियर टायर मिलते हैं। इसकी कीमत ₹10.15 से ₹10.57 लाख तक बताई गई है और 5000 घंटे/5 साल की वारंटी दी गई है।

2. महिंद्रा 475 डीआई

महिंद्रा 475 DI 42 HP श्रेणी का लोकप्रिय ट्रैक्टर है, जिसे सामान्य खेती से लेकर जुताई, बुवाई, ढुलाई और अन्य कृषि कार्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है। इसमें 4 सिलेंडर वाला 2731 cc इंजन दिया गया है, जो 2000 RPM पर काम करता है और 37.4 HP PTO पावर प्रदान करता है। इसका Water Cooled इंजन Dry Type एयर फिल्टर के साथ आता है। ट्रांसमिशन की बात करें तो इसमें Dry Type Single/Dual क्लच का विकल्प मिलता है और 8 Forward + 2 Reverse गियर दिए गए हैं। ट्रैक्टर की फॉरवर्ड स्पीड 2.74 से 30.48 kmph तथा रिवर्स स्पीड 4.16 से 12.42 kmph तक है। ब्रेकिंग के लिए Dry Disc Brakes/Oil-Immersed ब्रेक का विकल्प मिलता है, जबकि स्टीयरिंग में Mechanical/Power Steering का विकल्प दिया गया है। इसमें 6 Spline PTO के साथ 540 RPM PTO मिलता है। 48 लीटर का फ्यूल टैंक लंबे समय तक काम करने में उपयोगी है। इसका वजन 1950 किलोग्राम, व्हीलबेस 1945 mm और ग्राउंड क्लीयरेंस 350 mm है। हाइड्रोलिक्स में 1700/2000 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। इसमें 6.00 x 16 फ्रंट और 13.6 x 28 रियर टायर मिलते हैं। इसकी कीमत ₹6.92 से ₹7.20 लाख तक है।

3. मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई महा शक्ति

मैसी फर्ग्यूसन 241 DI महा शक्ति 42 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जो अपनी मजबूत कार्यक्षमता और खेती के अलग-अलग कामों के लिए उपयोगी फीचर्स के कारण किसानों के लिए एक व्यावहारिक विकल्प है। इसमें 3 सिलेंडर वाला 2500 cc Water Cooled इंजन दिया गया है, जो 1500 RPM पर चलता है और 35.7 HP PTO पावर प्रदान करता है। इंजन में Wet Type एयर फिल्टर दिया गया है। ट्रांसमिशन के लिए Dual Clutch के साथ Sliding Mesh/Partial Constant Mesh गियरबॉक्स मिलता है और 8 Forward + 2 Reverse अथवा 10 Forward + 2 Reverse गियर का विकल्प दिया गया है। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 30.4 kmph तक है। ट्रैक्टर में Oil Immersed Brakes दिए गए हैं और स्टीयरिंग के लिए Manual/Power Steering का विकल्प मिलता है। इसमें Quadra PTO दिया गया है, जो 1500 ERPM पर 540 RPM की गति से काम करता है। 47 लीटर का फ्यूल टैंक खेती के विभिन्न कार्यों के दौरान उपयोगी है। इसका वजन 1875 किलोग्राम, व्हीलबेस 1785 mm, लंबाई 3340 mm और ग्राउंड क्लीयरेंस 345 mm है। हाइड्रोलिक्स में 1700 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता और CAT-1 कैटेगरी दी गई है। इसमें 6.00 x 16 फ्रंट तथा 13.6 x 28/12.4 x 28 रियर टायर मिलते हैं। इसकी कीमत ₹6.86 से ₹7.14 लाख तक है।

4. स्वराज 744 एफई

स्वराज 744 FE 50 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसे खेती के विभिन्न कार्यों के लिए मजबूत इंजन, अच्छी हाइड्रोलिक क्षमता और उपयोगी PTO विकल्पों के साथ तैयार किया गया है। इसमें 3 सिलेंडर वाला 3307 cc इंजन दिया गया है, जो 2000 RPM पर काम करता है और 41.8 HP PTO पावर प्रदान करता है। इसका Water Cooled इंजन 3-Stage Oil Bath Type एयर फिल्टर के साथ आता है। ट्रांसमिशन में Single/Dual क्लच का विकल्प और 8 Forward + 2 Reverse गियर दिए गए हैं। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 3.1 से 29.2 kmph तथा रिवर्स स्पीड 4.3 से 14.3 kmph तक है। ब्रेकिंग के लिए Oil Immersed Brakes का विकल्प दिया गया है और स्टीयरिंग में Mechanical/Power Steering मिलता है। इसका Multi Speed PTO 540/1000 RPM पर काम करता है, जिससे अलग-अलग कृषि उपकरणों के साथ उपयोग में सुविधा मिलती है। ट्रैक्टर में 56 लीटर का फ्यूल टैंक दिया गया है। इसका वजन 2060 किलोग्राम, व्हीलबेस 2095 mm और ग्राउंड क्लीयरेंस 435 mm है। हाइड्रोलिक्स में 2000 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता के साथ Automatic Depth & Draft Control और I एवं II प्रकार के implement pins दिए गए हैं। इसमें 6.00 x 16/7.50 x 16 फ्रंट और 13.6 x 28/14.9 x 28 रियर टायर मिलते हैं। इसकी कीमत ₹7.42 से ₹7.73 लाख तक है।

5. जॉन डियर 5105

जॉन डियर 5105 40 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसे खेती के विभिन्न कार्यों में उपयोग के लिए दमदार इंजन और आधुनिक सुविधाओं के साथ तैयार किया गया है। इसमें 3 सिलेंडर वाला 2900 cc Coolant Cooled इंजन दिया गया है, जो 2100 RPM पर काम करता है और 34 HP PTO पावर प्रदान करता है। इंजन में Dry Type Dual Element एयर फिल्टर दिया गया है, जो इंजन में जाने वाली हवा को साफ रखने में मदद करता है। ट्रांसमिशन के लिए Single/Dual क्लच का विकल्प मिलता है और Collarshift तकनीक वाला 8 Forward + 4 Reverse गियरबॉक्स दिया गया है। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 3.25 से 35.51 kmph तथा रिवर्स स्पीड 4.27 से 15.45 kmph तक है। ब्रेकिंग के लिए Oil Immersed Disc Brakes और आसान संचालन के लिए Power

Steering दिया गया है। इसमें Independent 6 Spline PTO मिलता है, जो 2100 RPM इंजन स्पीड पर 540 RPM PTO देता है। ट्रैक्टर में 60 लीटर का फ्यूल टैंक दिया गया है, जिससे लंबे समय तक काम करने में सुविधा मिलती है। इसका वजन 1810 किलोग्राम और व्हीलबेस 1970 mm है। हाइड्रोलिक्स में 1600 Kgf की लिफ्टिंग क्षमता तथा Automatic Depth and Draft Control दिया गया है। इसमें 6.00 x 16 फ्रंट और 13.6 x 28 रियर टायर मिलते हैं। इसकी कीमत ₹7.09 से ₹7.37 लाख तक है और 5000 घंटे या 5 साल की वारंटी दी गई है।

6. पॉवर ट्रैक यूरो 439

पॉवर ट्रैक यूरो 439 42 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसे खेती के रोजमर्रा के कार्यों में बेहतर पावर, मजबूत निर्माण और उपयोगी हाइड्रोलिक क्षमता के साथ काम करने के लिए तैयार किया गया है। इसमें 3 सिलेंडर वाला 2339 cc इंजन दिया गया है, जो 2200 RPM पर काम करता है और 36.12 HP PTO पावर प्रदान करता है। इसका Water Cooled इंजन Bigger Oil Bath एयर फिल्टर के साथ आता है। ट्रांसमिशन में Constant Mesh Technology गियरबॉक्स तथा Single Diaphragm Clutch दिया गया है। इसमें 8 Forward + 2 Reverse गियर मिलते हैं, जिससे अलग-अलग कृषि कार्यों के अनुसार गति का चयन किया जा सकता है। ब्रेकिंग के लिए Oil Immersed Brakes और स्टीयरिंग में Power/Manual Steering का विकल्प मिलता है। इसका Single PTO 540 RPM पर काम करता है। ट्रैक्टर में 50 लीटर की फ्यूल टैंक क्षमता दी गई है। इसका कुल वजन 1850 किलोग्राम, व्हीलबेस 2010 mm और ग्राउंड क्लीयरेंस 400 mm है। हाइड्रोलिक्स में 1600 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है, साथ ही 2 लेवलर और Automatic Depth & Draft Control के साथ 3-पॉइंट लिंकेज मिलता है। यह 2WD ट्रैक्टर है और इसमें 6.00 x 16 फ्रंट तथा 13.6 x 28 रियर टायर दिए गए हैं। इसमें 5000 घंटे या 5 साल की वारंटी मिलती है। भारत में इसकी कीमत ₹7.25 से ₹7.55 लाख एक्स-शोरूम बताई गई है।

7. न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स स्पेशल एडिशन

न्यू हॉलैंड 3630 TX स्पेशल एडिशन 50 HP श्रेणी का शक्तिशाली ट्रैक्टर है, जिसे भारी कृषि कार्यों और विभिन्न उपकरणों के साथ उपयोग के लिए मजबूत इंजन, बेहतर हाइड्रोलिक्स और उपयोगी ट्रांसमिशन के साथ तैयार किया गया है। इसमें 3 सिलेंडर वाला 2931 cc Water Cooled इंजन दिया गया है, जो 2100 RPM पर काम करता है और 46 HP PTO पावर प्रदान करता है। इंजन में Dry Type Air Cleaner दिया गया है। ट्रांसमिशन में Double Clutch with Independent Clutch Lever तथा Constant Mesh/Partial Synchro Mesh तकनीक मिलती है। इसमें 12 Forward + 3 Reverse गियर दिए गए हैं और इसकी फॉरवर्ड स्पीड 1.83 से 30.84 kmph तक है। ब्रेकिंग के लिए Rear Oil Immersed Multi Disc Brake और आसान संचालन के लिए Power Steering दिया गया है। PTO में GSPTO/RPTO विकल्प मिलता है तथा PTO स्पीड 540 RPM है। इसका 60 लीटर का फ्यूल टैंक लंबे समय तक खेती के कार्यों के लिए उपयोगी है। ट्रैक्टर का वजन 2195 किलोग्राम, व्हीलबेस 2040 mm, लंबाई 3700 mm और ग्राउंड क्लीयरेंस 505 mm है। हाइड्रोलिक्स में 1700 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है, जो Assist RAM के साथ 2000 किलोग्राम तक बताई गई है। इसमें DRC Valve और Isolator Valve भी दिए गए हैं। टायरों में 7.50 x 16/9.5 x 24 फ्रंट और 14.9 x 28/16.9 x 28 रियर विकल्प मिलते हैं। इसकी कीमत ₹9.75 से ₹10.15 लाख तक है और वारंटी 6000 घंटे या 6 साल है।

मैसी फर्ग्यूसन 244 डीआई सोना: 44 एचपी श्रेणी में लोकप्रिय ट्रैक्टर

मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना 44 एचपी की रेंज में एक शानदार ट्रैक्टर

मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना 44 एचपी श्रेणी में आने वाला एक उपयोगी और दमदार ट्रैक्टर है। इसे खेती के विभिन्न कार्यों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। ट्रैक्टर में 3 सिलेंडर वाला इंजन दिया गया है, जिसकी सीसी क्षमता 2500 सीसी है। इसका इंजन खेती के दौरान अच्छी पावर देने में सक्षम है। यह 2 व्हील ड्राइव (2WD) विकल्प के साथ आता है, इसलिए सामान्य कृषि कार्यों में इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। किसान इसे जुताई, बुवाई, ढुलाई और दूसरे खेत संबंधी कार्यों के लिए उपयोग कर सकते हैं। कंपनी की ओर से इसमें आधुनिक तकनीक के साथ बेहतर प्रदर्शन पर ध्यान दिया गया है। 44 एचपी कैटेगरी में आने के कारण यह छोटे और मध्यम स्तर के किसानों के लिए उपयोगी विकल्प माना जा सकता है।

मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना ट्रैक्टर का

इंजन और पीटीओ एचपी

मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना में 3 सिलेंडर का 2500 सीसी इंजन मिलता है। यह इंजन 44 एचपी की अधिकतम पावर कैटेगरी में आता है, जबकि इसका पीटीओ पावर 37.84 एचपी है। इंजन में Inline फ्यूल पंप दिया गया है, जो ईंधन आपूर्ति प्रणाली का हिस्सा है। ट्रैक्टर की इंजन क्षमता इसे खेती के विभिन्न उपकरणों के साथ काम करने के लिए उपयुक्त बनाती है। खासकर ऐसे कृषि कार्यों में, जहां लगातार पावर की जरूरत होती है, यह ट्रैक्टर किसानों के लिए उपयोगी साबित हो सकता है। इसका इंजन खेत में काम करते समय पर्याप्त ताकत देने के साथ ट्रैक्टर की कार्यक्षमता को बेहतर बनाने में मदद करता है। 44 एचपी की श्रेणी में होने के कारण इसे कई सामान्य कृषि कार्यों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना ट्रैक्टर का गियर और ट्रांसमिशन

मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना ट्रैक्टर में 10 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर वाला गियरबॉक्स दिया गया है। इसका ट्रांसमिशन आंशिक स्थिर जाल प्रकार का है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इसकी अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड 30.36 किलोमीटर प्रति घंटा है। अलग-अलग कृषि कार्यों के दौरान उचित स्पीड का चयन करने के लिए गियर विकल्प महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेत में जुताई या अन्य उपकरणों के साथ काम करते समय कम गति उपयोगी होती है, जबकि सड़क पर ट्रैक्टर ले जाने के दौरान अधिक गति का इस्तेमाल किया जा सकता है। इसमें डुअल क्लच दिया गया है, जो ट्रैक्टर के संचालन और पीटीओ-आधारित कामों में सुविधा प्रदान करता है। इस तरह इसका ट्रांसमिशन सिस्टम खेती और परिवहन दोनों तरह के कामों के लिए उपयोगी बनाया गया है।

मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना ट्रैक्टर के ब्रेक और स्टीयरिंग

मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना में मल्टी प्लेट ऑयल इमर्स्ड ब्रेक दिए गए हैं। ऑयल इमर्स्ड ब्रेक सिस्टम ट्रैक्टर के नियमित संचालन के दौरान बेहतर ब्रेकिंग क्षमता और टिकाऊपन के लिए जाना जाता है। ट्रैक्टर में स्टीयरिंग के लिए मैनुअल स्टीयरिंग दी जाती है, जबकि पावर स्टीयरिंग का विकल्प भी उपलब्ध है। पावर स्टीयरिंग खेत में लंबे समय तक काम करते हुए स्टीयरिंग संचालन को अपेक्षाकृत आसान बना सकती है। विशेष रूप से बार-बार मोड़ लेने या अलग-अलग कृषि उपकरणों के साथ काम करने के दौरान स्टीयरिंग का महत्व बढ़ जाता है। किसान अपनी जरूरत और उपलब्ध विकल्पों के अनुसार स्टीयरिंग व्यवस्था का चयन कर सकते हैं।

मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना ट्रैक्टर की पीटीओ और आरपीएम

मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना ट्रैक्टर में Quadra PTO दिया गया है, जिसकी स्पीड 540 आरपीएम @ 1906 ERPM बताई गई है। पीटीओ यानी पावर टेक-ऑफ ट्रैक्टर की इंजन पावर को कृषि उपकरणों तक पहुंचाने का काम करता है। रोटावेटर, थ्रेशर और अन्य पीटीओ संचालित उपकरणों के साथ काम करते समय पीटीओ महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना 37.84 एचपी पीटीओ पावर होने के कारण कई कृषि उपकरणों को चलाने के लिए उपयोगी हो सकता है। किसानों के लिए पीटीओ की क्षमता इसलिए महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि अलग-अलग कृषि कार्यों के लिए अलग-अलग उपकरणों की जरूरत पड़ती है। इस ट्रैक्टर में दिया गया Quadra PTO इसे बहुउद्देशीय कृषि कार्यों के लिए बेहतर विकल्प बनाने में मदद करता है।

मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना ट्रैक्टर की हाइड्रोलिक क्षमता

मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना में 1700 Kgf का वजन उठाने की क्षमता वाला हाइड्रोलिक सिस्टम दिया गया है। ट्रैक्टर के हाइड्रोलिक्स का उपयोग कृषि उपकरणों को उठाने, नीचे करने और खेत में उनकी स्थिति नियंत्रित करने के लिए किया जाता है। 1700 Kgf की लिफ्टिंग क्षमता किसानों को विभिन्न उपकरणों के साथ काम करने में मदद करती है। ट्रैक्टर में 3-पॉइंट लिंकेज आधारित उपकरणों का इस्तेमाल किया जा सकता है। खेती में रोटावेटर, कल्टीवेटर, प्लाऊ और अन्य उपकरणों को उठाने के लिए हाइड्रोलिक सिस्टम की क्षमता महत्वपूर्ण होती है। इस लिहाज से इसकी हाइड्रोलिक क्षमता सामान्य कृषि जरूरतों के लिए उपयोगी है। किसान अपने उपकरण के वजन और काम की जरूरत के अनुसार इसकी क्षमता का इस्तेमाल कर सकते हैं।

मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना ट्रैक्टर का फ्यूल टैंक और डायमेंशन

मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना ट्रैक्टर में 55 लीटर क्षमता वाला फ्यूल टैंक दिया गया है। बड़ी

SONALIKA
जीतने का दम
दमदार ट्रैक्टर,
जो दे आपके भरोसे को दम
सोनालीका
सिकंदर
DI 42 P+
SONALIKA
DI-42
SONALIKA
2891 cc
दमदार इंजन,
205 Nm टॉर्क
ADVANCED 5G
HYDRAULICS
2000 kg
लिफ्ट कॅपेसिटी

क्षमता वाला फ्यूल टैंक खेती के दौरान बार-बार ईंधन भरने की जरूरत को कम करने में मदद कर सकता है। ट्रैक्टर का कुल वजन 1950 किलोग्राम है। इसका व्हील बेस 1935 मिलीमीटर, कुल लंबाई 3446 मिलीमीटर और कुल चौड़ाई 1640 मिलीमीटर बताई गई है। इन डायमेंशन के साथ ट्रैक्टर को कृषि कार्यों के लिए तैयार किया गया है। इसमें आगे के टायर 6.00 X 16 और पीछे के टायर 13.6 X 28 आकार के दिए गए हैं। 2WD सिस्टम के साथ ये टायर ट्रैक्टर को सामान्य खेत और सड़क संबंधी कार्यों में उपयोग करने में मदद करते हैं। इसका वजन और आकार इसे 44 एचपी श्रेणी के ट्रैक्टर के अनुरूप बनाते हैं।

मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना की कीमत

भारत में मैसी फर्ग्युसन 244 डीआई सोना ट्रैक्टर की कीमत ₹6.57 लाख से ₹6.83 लाख तक बताई गई है। वास्तविक कीमत राज्य, डीलर, मॉडल वेरिएंट, टैक्स, बीमा और अन्य शुल्क के आधार पर अलग हो सकती है। इसलिए खरीदारी से पहले स्थानीय अधिकृत डीलर से मौजूदा ऑन-रोड कीमत और उपलब्ध ऑफर्स की जानकारी लेना उचित रहेगा। फीचर्स की बात करें तो 44 एचपी इंजन, 37.84 पीटीओ एचपी, 10 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर, डुअल क्लच, ऑयल इमर्स्ड ब्रेक, 55 लीटर फ्यूल टैंक और 1700 Kgf हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता इसे खेती के लिए एक उपयोगी पैकेज बनाते हैं। किसान अपनी जमीन, खेती के तरीके और इस्तेमाल किए जाने वाले कृषि उपकरणों के आधार पर इस ट्रैक्टर का चुनाव कर सकते हैं।

मैसी फर्ग्यूसन 7250 डीआई पावर अप VS मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई: कीमत, फीचर और स्पेसिफिकेशन

मैसी फर्ग्यूसन 7250 डीआई पावर अप VS मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई: मुख्य अंतर

मैसी फर्ग्यूसन भारतीय कृषि क्षेत्र में एक जाना-पहचाना ट्रैक्टर ब्रांड है, जिसके कई मॉडल अलग-अलग एचपी श्रेणियों और खेती की जरूरतों के अनुसार किसानों को उपलब्ध कराए जाते हैं। मैसी फर्ग्यूसन 7250 डीआई पावर अप और मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई दोनों ही 50 एचपी श्रेणी के ट्रैक्टर हैं और खेती के साथ-साथ ढुलाई जैसे कामों के लिए उपयोग किए जा सकते हैं। हालांकि, दोनों की इंजन तकनीक, ट्रांसमिशन, ब्रेक, हाइड्रोलिक्स, फ्यूल टैंक, वजन, डायमेंशन और कीमत में कुछ महत्वपूर्ण अंतर देखने को मिलते हैं। ऐसे में किसान के लिए यह समझना जरूरी है कि दोनों में से कौन

सा ट्रैक्टर उसकी खेती और बजट के लिए ज्यादा उपयुक्त है।

मैसी फर्ग्यूसन 7250 डीआई पावर अप बनाम 245 डीआई: इंजन में अंतर

इंजन के मामले में दोनों ट्रैक्टर 50 HP श्रेणी में आते हैं और दोनों में 3-सिलेंडर, 2700 cc इंजन दिया गया है। मैसी फर्ग्यूसन 7250 डीआई पावर अप में SIMPSONS TIII A SJ327 इंजन दिया गया है, जबकि 245 डीआई में भी 3 सिलेंडर वाला 2700 cc इंजन मिलता है। दोनों मॉडल किसानों को सामान्य जुताई, कल्टीवेटर, रोटावेटर, ट्रॉली और अन्य कृषि कार्यों के लिए पर्याप्त पावर प्रदान करते हैं। हालांकि, 7250 डीआई पावर अप को इसके मजबूत निर्माण और आधुनिक फीचर्स के साथ अपेक्षाकृत अधिक हाई-परफॉर्मेंस उपयोग को ध्यान में रखकर देखा जाता है। दूसरी ओर, मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई एक पारंपरिक और भरोसेमंद मॉडल है, जिसे किसान रोजमर्रा के कृषि कार्यों के लिए पसंद कर सकते हैं। इंजन रेटेड आरपीएम की बात करें तो 7250 डीआई पावर अप का इंजन 2100 RPM पर रेटेड है, जबकि 245 डीआई का इंजन 1790 RPM पर रेटेड है। PTO पावर के मामले में 245 डीआई लगभग 42.5 HP PTO पावर प्रदान करता है। इसलिए यदि किसान ऐसे कृषि उपकरणों का अधिक इस्तेमाल करता है जिनमें लगातार और प्रभावी PTO पावर की जरूरत होती है, तो दोनों मॉडल के PTO सिस्टम और संबंधित उपकरणों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर चुनाव करना बेहतर रहेगा।

ट्रांसमिशन और गियरबॉक्स में क्या अंतर है?

ट्रांसमिशन दोनों ट्रैक्टरों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है। मैसी फर्ग्यूसन 7250 डीआई पावर अप में Comfimesh ट्रांसमिशन के साथ 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर दिए गए हैं। यह गियर सेटअप खेत में अलग-अलग कृषि कार्यों के लिए आवश्यक गति का चुनाव करने में मदद करता है। इसकी अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड लगभग 34.87 किमी/घंटा बताई गई है, जिससे यह खेत के साथ सड़क पर ट्रॉली और अन्य परिवहन कार्यों में भी उपयोगी बनता है। वहीं मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई में Partial Constant Mesh/Sliding Mesh ट्रांसमिशन के साथ 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर मिलते हैं। इसकी अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड लगभग 34.2 किमी/घंटा है। यानी गियर की संख्या दोनों में समान है, लेकिन ट्रांसमिशन सिस्टम में अंतर है। 7250 डीआई पावर अप उन किसानों के लिए आकर्षक हो सकता है जो अपेक्षाकृत स्मूद गियर संचालन और आधुनिक ट्रांसमिशन अनुभव चाहते हैं, जबकि 245 डीआई का ट्रांसमिशन लंबे समय से इस्तेमाल किए जाने वाले पारंपरिक सेटअप पर आधारित है।

क्लच में दोनों ट्रैक्टरों की स्थिति

क्लच की बात करें तो दोनों ट्रैक्टरों में Dual Clutch दिया गया है। ड्यूल क्लच PTO और ट्रैक्टर के ड्राइव सिस्टम को बेहतर तरीके से नियंत्रित करने में मदद करता है और कृषि उपकरणों के साथ काम करते समय उपयोगी साबित होता है। इस लिहाज से दोनों मॉडलों में बड़ा अंतर नहीं है। किसान को यहां मुख्य रूप से अपने काम के प्रकार, ट्रांसमिशन सिस्टम और अन्य फीचर्स को ध्यान में रखकर निर्णय लेना चाहिए।

PTO सिस्टम में अंतर

PTO कृषि ट्रैक्टर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है, क्योंकि रोटावेटर, थ्रेशर, रीपर, पानी के पंप और अन्य PTO संचालित उपकरण इसी सिस्टम से चलते हैं। मैसी फर्ग्यूसन 7250 डीआई पावर अप में RPTO यानी Reverse PTO की सुविधा दी गई है। Reverse PTO कुछ विशेष परिस्थितियों में कृषि उपकरण के फंसने या जाम होने पर उसे निकालने में उपयोगी हो सकता है। इसमें 540 RPM PTO स्पीड 1735 ERPM पर मिलती है। दूसरी ओर, मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई में Live,

Six-splined Shaft PTO दिया गया है और 540 PTO RPM 1790 ERPM पर मिलती है। इसलिए यदि किसान रोटावेटर और अन्य PTO आधारित उपकरणों का नियमित इस्तेमाल करता है, तो PTO के प्रकार और अपने कृषि उपकरणों के साथ उसकी अनुकूलता को ध्यान में रखना चाहिए। PTO के मामले में 7250 डीआई पावर अप कुछ अतिरिक्त उपयोगिता प्रदान करता है, जबकि 245 डीआई का PTO सिस्टम सामान्य कृषि जरूरतों के लिए पर्याप्त है।

हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता में अंतर

हाइड्रोलिक्स की क्षमता भी ट्रैक्टर चुनते समय महत्वपूर्ण होती है, खासकर तब जब किसान भारी कृषि यंत्रों का उपयोग करता हो। मैसी फर्ग्यूसन 7250 डीआई पावर अप में लगभग 1800 किलोग्राम की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। यह क्षमता रोटावेटर, कल्टीवेटर, MB प्लाऊ और दूसरे कृषि उपकरणों को संभालने में मदद करती है। वहीं मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता लगभग 1700 किलोग्राम है। यानी दोनों में केवल लगभग 100 किलोग्राम का अंतर है। सामान्य खेती के लिए 245 डीआई की लिफ्टिंग क्षमता भी उपयोगी है, लेकिन यदि किसान नियमित रूप से अपेक्षाकृत भारी उपकरणों का इस्तेमाल करता है, तो 7250 डीआई पावर अप की अधिक लिफ्टिंग क्षमता उसके लिए अतिरिक्त लाभ दे सकती है।

ब्रेक सिस्टम में बड़ा अंतर

ब्रेक सिस्टम दोनों ट्रैक्टरों के बीच एक प्रमुख अंतर है। मैसी फर्ग्यूसन 7250 डीआई पावर अप में Oil Immersed Brakes दिए गए हैं। तेल में डूबे ब्रेक लंबे समय तक काम करने, बेहतर ब्रेकिंग नियंत्रण और कम रखरखाव के लिहाज से उपयोगी माने जाते हैं। भारी ट्रॉली या ढुलाई के दौरान और खेत में बार-बार ब्रेक लगाने की स्थिति में यह सिस्टम किसान के लिए उपयोगी हो सकता है। इसके विपरीत, मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई में Sealed Dry Disc Brakes दिए गए हैं। ये ब्रेक सामान्य कृषि और परिवहन कार्यों के लिए उपयोगी हैं, लेकिन तकनीक के लिहाज से 7250 डीआई पावर अप का Oil Immersed Brake सिस्टम अधिक आधुनिक विकल्प माना जा सकता है। इसलिए यदि किसान के लिए ब्रेकिंग सिस्टम और लंबे समय तक कम मेंटेनेंस महत्वपूर्ण है, तो 7250 डीआई पावर अप को प्राथमिकता दी जा सकती है।

स्टीयरिंग में दोनों मॉडल कितने अलग हैं?

स्टीयरिंग के मामले में दोनों ट्रैक्टर किसानों को विकल्प प्रदान करते हैं। मैसी फर्ग्यूसन 7250 डीआई पावर अप में Manual और Power Steering दोनों विकल्प उपलब्ध हैं। पावर स्टीयरिंग का विकल्प खेत में लंबे समय तक काम करने और भारी कृषि उपकरणों के साथ ट्रैक्टर चलाने के दौरान स्टीयरिंग को अपेक्षाकृत आसान बना सकता है। वहीं मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई में Mechanical Steering के साथ Power Steering का ऑप्शन उपलब्ध है। इसमें Single Drop Arm स्टीयरिंग एडजस्टमेंट दिया गया है। इसलिए इस श्रेणी में दोनों ट्रैक्टरों में किसान अपनी जरूरत और बजट के अनुसार स्टीयरिंग विकल्प चुन सकता है।

फ्यूल टैंक क्षमता में अंतर

लंबे समय तक खेत में काम करने वाले किसानों के लिए फ्यूल टैंक की क्षमता भी महत्वपूर्ण होती है। 7250 डीआई पावर अप में 60 लीटर का फ्यूल टैंक दिया गया है, जबकि 245 डीआई में 55 लीटर की फ्यूल टैंक क्षमता मिलती है। इसका अर्थ है कि 7250 डीआई पावर अप में एक बार ईंधन भरने के बाद अपेक्षाकृत लंबे समय तक काम करने की सुविधा मिल सकती है। 245 डीआई का 55 लीटर टैंक भी सामान्य कृषि कार्यों के लिए पर्याप्त हो सकता है, लेकिन जिन किसानों के पास बड़े खेत हैं या जिन्हें लगातार लंबे समय तक ट्रैक्टर चलाना

पड़ता है, उनके लिए 7250 डीआई पावर अप की अधिक फ्यूल टैंक क्षमता सुविधाजनक हो सकती है।

वजन और डायमेंशन में अंतर

ट्रैक्टर के वजन और आकार का सीधा प्रभाव खेत में स्थिरता और संचालन पर पड़ सकता है। मैसी फर्ग्यूसन 7250 डीआई पावर अप का वजन लगभग 2110 किलोग्राम है, जबकि 245 डीआई का वजन 1915 किलोग्राम है। यानी 7250 डीआई पावर अप लगभग 195 किलोग्राम ज्यादा भारी है। इसका अधिक वजन भारी कृषि उपकरणों के साथ काम करते समय ट्रैक्टर को बेहतर स्थिरता प्रदान करने में मदद कर सकता है।
डायमेंशन की बात करें तो 7250 डीआई पावर अप की लंबाई लगभग 3610 mm, चौड़ाई 1747 mm और व्हीलबेस 1930 mm है। वहीं 245 डीआई की लंबाई 3320 mm, चौड़ाई 1705 mm और व्हीलबेस 1830 mm है। इस तरह 7250 डीआई पावर अप आकार में बड़ा और व्हीलबेस के मामले में लंबा है, जबकि 245 डीआई अपेक्षाकृत कॉम्पैक्ट है। छोटे खेतों और संकरी जगहों पर काम करने वाले किसानों के लिए कॉम्पैक्ट आकार एक उपयोगी पहलू हो सकता है।

टायर साइज में क्या अंतर है?

टायर के मामले में दोनों ट्रैक्टरों में बेसिक टायर साइज समान दिए गए हैं। दोनों में 6.00 x 16 फ्रंट और 13.6 x 28 रियर टायर मिलते हैं। इसलिए सामान्य खेती और खेत में पकड़ के लिहाज से दोनों मॉडल समान टायर कॉन्फिगरेशन के साथ आते हैं। हालांकि 7250 डीआई पावर अप में बड़े वैकल्पिक टायरों का विकल्प भी उपलब्ध है, जिसमें फ्रंट में 7.50 x 16 और रियर में 14.9 x 28 टायर लिए जा सकते हैं। यह विकल्प उन किसानों के लिए उपयोगी हो सकता है जिन्हें अधिक ग्रिप और भारी काम के दौरान बेहतर ट्रैक्शन की जरूरत होती है।

कीमत में दोनों ट्रैक्टरों के बीच अंतर

कीमत के मामले में मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई अपेक्षाकृत कम कीमत वाला विकल्प है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹7.59 लाख से ₹7.90 लाख के बीच बताई गई है। वहीं मैसी फर्ग्यूसन 7250 डीआई पावर अप की एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹8.08 लाख से ₹8.41 लाख तक रहती है। इस तरह दोनों के बीच शुरुआती कीमत में लगभग ₹49,000 से ₹51,000 तक का अंतर देखा जा सकता है। यह अंतर राज्य, डीलर, मॉडल वेरिएंट, उपलब्ध फीचर्स, बीमा, आरटीओ और स्थानीय टैक्स आदि के कारण बदल सकता है। यदि किसान का बजट सीमित है और उसे सामान्य खेती के लिए 50 HP का भरोसेमंद ट्रैक्टर चाहिए, तो 245 डीआई आकर्षक विकल्प बन सकता है। वहीं अतिरिक्त बजट के साथ बेहतर ब्रेक सिस्टम, अधिक हाइड्रोलिक क्षमता, बड़ी फ्यूल टैंक क्षमता और कुछ अतिरिक्त सुविधाएं चाहिए, तो 7250 डीआई पावर अप पर विचार किया जा सकता है।

किस किसान के लिए मैसी फर्ग्यूसन 7250 डीआई पावर अप बेहतर है?

यदि किसान को 50 HP श्रेणी में ऐसा ट्रैक्टर चाहिए जो भारी कृषि कार्यों, नियमित ढुलाई, बड़े उपकरणों और लंबे समय तक काम करने के लिए बेहतर सुविधाएं प्रदान करे, तो मैसी फर्ग्यूसन 7250 डीआई पावर अप एक मजबूत विकल्प हो सकता है। इसका अधिक वजन, 60 लीटर फ्यूल टैंक, 1800 किलोग्राम हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता, Oil Immersed Brakes और RPTO जैसी सुविधाएं इसे अपेक्षाकृत अधिक फीचर-रिच विकल्प बनाती हैं। खासकर वे किसान जो ट्रैक्टर का इस्तेमाल खेती के साथ-साथ व्यावसायिक परिवहन या भारी उपकरणों के लिए भी करते हैं, उनके लिए यह मॉडल अधिक उपयोगी साबित हो सकता है।

किस किसान के लिए मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई बेहतर है?

मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई उन किसानों के लिए

अच्छा विकल्प हो सकता है जो 50 HP का ट्रैक्टर कम बजट में खरीदना चाहते हैं और जिन्हें खेत के सामान्य कामों के लिए भरोसेमंद मशीन की आवश्यकता है। इसका अपेक्षाकृत कम वजन और छोटा आकार छोटे एवं मध्यम खेतों में संचालन के लिए उपयोगी हो सकते हैं। इसके अलावा 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर, Dual Clutch, 1700 किलोग्राम हाइड्रोलिक क्षमता और 47 लीटर फ्यूल टैंक जैसी सुविधाएं सामान्य खेती के कार्यों के लिए पर्याप्त हैं। इसलिए सीमित बजट वाले किसान के लिए 245 डीआई एक व्यावहारिक विकल्प बन सकता है।

टैफे 6028 एम: 24 एचपी श्रेणी में बेहतरीन कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर

टैफे 6028 एम: ट्रैक्टर की कीमत और स्पेसिफिकेशन्स

टैफे 6028 एम एक कॉम्पैक्ट और दमदार ट्रैक्टर है, जिसे भारतीय किसानों की रोजमर्रा की कृषि जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। यह ट्रैक्टर खेती के विभिन्न कार्यों को आसानी से पूरा करने के लिए पर्याप्त पावर और उपयोगी फीचर्स के साथ आता है। ट्रैक्टर का डिजाइन इस तरह तैयार किया गया है कि किसान खेत में लंबे समय तक काम करते हुए बेहतर नियंत्रण और आराम का अनुभव कर सके। इसका 4 व्हील ड्राइव मॉडल इसे अलग-अलग तरह की कृषि परिस्थितियों में उपयोगी बनाता है और खेत में बेहतर पकड़ तथा ट्रैक्शन देने में मदद करता है।

टैफे 6028 एम इंजन और पावर

टैफे 6028 एम में 24 HP का शक्तिशाली इंजन दिया गया है, जो छोटे और मध्यम स्तर के कृषि कार्यों के लिए पर्याप्त पावर प्रदान करता है। इस ट्रैक्टर में 1318 cc की इंजन क्षमता दी गई है, जो इंजन को बेहतर तरीके से काम करने और लंबे समय तक विश्वसनीय प्रदर्शन देने में सहायता करती है। इसका इंजन खेती के विभिन्न कार्यों के दौरान संतुलित पावर प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है, जिससे किसान जुताई, कल्टीवेशन और अन्य जरूरी कृषि कार्यों को आसानी से पूरा कर सकते हैं। टैफे 6028 एम को मजबूत और टिकाऊ प्रदर्शन को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। खेत की अलग-अलग परिस्थितियों में काम करते समय ट्रैक्टर सुचारू संचालन बनाए रखने में मदद करता है। इसके अलावा, इसका इंजन प्रदर्शन और ईंधन दक्षता के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए तैयार किया गया है, जिससे किसान को लंबे समय तक काम करने के दौरान ईंधन खर्च को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है। इस तरह टैफे 6028 एम पावर, माइलेज और टिकाऊपन का संतुलन प्रदान करने वाला कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर विकल्प है।

टैफे 6028 एम का ट्रांसमिशन और गियरबॉक्स

ट्रांसमिशन की बात करें तो टैफे 6028 एम में 9 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर वाला गियरबॉक्स दिया गया है। गियर के ये विकल्प किसान को खेत में अलग-अलग कृषि कार्यों के अनुसार उपयुक्त गति चुनने की सुविधा देते हैं। जुताई, कल्टीवेशन या अन्य

कृषि उपकरणों के साथ काम करते समय अलग-अलग गति की आवश्यकता होती है और 9 फॉरवर्ड तथा 3 रिवर्स गियर इस जरूरत को पूरा करने में मदद करते हैं। गियरबॉक्स के साथ इसमें सिंगल क्लच दिया गया है, जो गियर बदलने के दौरान ट्रैक्टर के संचालन को सुचारू बनाने और चालक को बेहतर नियंत्रण देने में मदद करता है। किसान अलग-अलग काम और लोड के अनुसार गियर का चुनाव कर सकता है, जिससे खेत में ट्रैक्टर का संचालन अधिक सुविधाजनक हो जाता है।

टैफे 6028 एम पावर स्टीयरिंग

किसी भी ट्रैक्टर के लिए स्टीयरिंग सिस्टम का आरामदायक और आसान होना बहुत जरूरी है, खासकर तब जब किसान को लंबे समय तक खेत में काम करना हो। टैफे 6028 एम में Power Steering दिया गया है, जिससे ट्रैक्टर को मोड़ने और दिशा बदलने में कम मेहनत करनी पड़ती है। यह सुविधा खेत में बार-बार मोड़ लेने वाले कार्यों के दौरान विशेष रूप से उपयोगी हो सकती है। पावर स्टीयरिंग के कारण ऑपरेटर को लंबे समय तक ट्रैक्टर चलाने में बेहतर सुविधा मिलती है। छोटे खेतों, बागवानी क्षेत्रों और ऐसे कृषि कार्यों में जहां बार-बार दिशा बदलने की जरूरत पड़ती है, यह स्टीयरिंग सिस्टम ट्रैक्टर के संचालन को आसान बनाने में मदद कर सकता है।

टैफे 6028 एम फ्यूल टैंक क्षमता

टैफे 6028 एम में 23 लीटर की फ्यूल टैंक क्षमता दी गई है। कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर होने के कारण यह क्षमता इसके निर्धारित कृषि कार्यों के लिए उपयोगी है। फ्यूल टैंक किसान को खेत में आवश्यक कार्य पूरा करने के लिए पर्याप्त ईंधन रखने की सुविधा देता है और काम के बीच बार-बार ईंधन भरवाने की जरूरत को कम करने में मदद कर सकता है। ट्रैक्टर की वास्तविक ईंधन खपत मिट्टी की स्थिति, लोड, इस्तेमाल किए जा रहे कृषि उपकरण, कार्य की गहराई और ड्राइविंग तरीके जैसे कई कारकों पर निर्भर करती है। इसलिए किसान को अपने दैनिक उपयोग के अनुसार इसकी ईंधन आवश्यकता का आकलन करना चाहिए।

टैफे 6028 एम हाइड्रोलिक्स और लिफ्टिंग क्षमता

टैफे 6028 एम को सामान्य कृषि उपकरणों के साथ काम करने के लिए तैयार किया गया है और इसमें भरोसेमंद हाइड्रोलिक सिस्टम दिया गया है। इसका हाइड्रोलिक सिस्टम कृषि उपकरणों को उठाने और खेत में सही स्थिति में संचालित करने में मदद करता है। छोटे और मध्यम स्तर के कृषि कार्यों के लिए यह ट्रैक्टर मानक कृषि उपकरणों को संभालने में सक्षम है। किसान को किसी भी कृषि उपकरण का इस्तेमाल करने से पहले उसके वजन और ट्रैक्टर की निर्धारित लिफ्टिंग क्षमता के बीच अनुकूलता जरूर जांचनी चाहिए। सही उपकरण का इस्तेमाल करने से ट्रैक्टर पर अनावश्यक दबाव कम होता है और खेती का काम सुरक्षित तथा प्रभावी तरीके से किया जा सकता है।

टैफे 6028 एम 4WD ट्रैक्टर

टैफे 6028 एम का 4 Wheel Drive मॉडल इसे अलग-अलग खेतों और कृषि परिस्थितियों में उपयोगी बनाता है। 4WD सिस्टम चारों पहियों को ड्राइव प्रदान करके खेत में बेहतर ट्रैक्शन और पकड़ बनाए रखने में मदद करता है। विशेष रूप से ऐसी जमीन जहां मिट्टी नरम हो, खेत में नमी अधिक हो या ट्रैक्टर को अतिरिक्त पकड़ की आवश्यकता हो, वहां 4WD सिस्टम उपयोगी साबित हो सकता है। 4WD तकनीक ट्रैक्टर को कृषि उपकरणों के साथ काम करते समय बेहतर नियंत्रण देने में भी मदद कर सकती है। हालांकि वास्तविक ट्रैक्शन मिट्टी, टायर, भार, ढलान और खेत की स्थिति जैसे विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है।

टैफे 6028 एम ब्रेक सिस्टम

सुरक्षित संचालन के लिए टैफे 6028 एम में Oil Immersed Brakes दिए गए हैं। तेल में डूबे हुए

ब्रेक लंबे समय तक ट्रैक्टर के इस्तेमाल के दौरान बेहतर ब्रेकिंग नियंत्रण प्रदान करने में मदद करते हैं। खेत में काम करते समय या अलग-अलग रास्तों पर ट्रैक्टर चलाते समय प्रभावी ब्रेक सिस्टम ऑपरेटर की सुरक्षा और ट्रैक्टर के नियंत्रण के लिए महत्वपूर्ण होता है। Oil Immersed Brakes लगातार काम के दौरान ब्रेक सिस्टम में गर्मी और घिसाव को नियंत्रित करने में सहायता कर सकते हैं। इसके बावजूद किसान को ट्रैक्टर के ब्रेक सिस्टम की नियमित जांच और निर्माता के निर्देशों के अनुसार सर्विसिंग करानी चाहिए।

टैफे 6028 एम एयर फिल्टर

टैफे 6028 एम में Dry Type Air Filter दिया गया है। एयर फिल्टर इंजन में जाने वाली हवा से धूल और अन्य अशुद्धियों को रोकने में मदद करता है। कृषि क्षेत्र में ट्रैक्टर अक्सर धूल और मिट्टी वाली परिस्थितियों में काम करता है, इसलिए इंजन तक साफ हवा पहुंचना उसके प्रदर्शन और टिकाऊपन के लिए महत्वपूर्ण होता है। एयर फिल्टर की समय-समय पर सफाई और आवश्यकता के अनुसार उसे बदलना इंजन के बेहतर प्रदर्शन को बनाए रखने में मदद कर सकता है। विशेष रूप से धूल भरे खेतों में नियमित एयर फिल्टर मेंटेनेंस ट्रैक्टर की कार्यक्षमता के लिए जरूरी है।

टैफे 6028 एम की कीमत

टैफे 6028 एम ट्रैक्टर की कीमत लगभग ₹7.60 लाख से ₹8.30 लाख के बीच बताई गई है। यह कीमत अलग-अलग वेरिएंट और बाजार की परिस्थितियों के अनुसार बदल सकती है। इसके अलावा राज्य, आरटीओ शुल्क, बीमा, स्थानीय टैक्स और डीलर द्वारा दिए जाने वाले ऑफर के कारण ट्रैक्टर की ऑन-रोड कीमत एक्स-शोरूम कीमत से अलग हो सकती है।

इस कीमत श्रेणी में टैफे 6028 एम उन किसानों के लिए एक विकल्प हो सकता है जो कॉम्पैक्ट आकार के साथ 4WD क्षमता वाला ट्रैक्टर चाहते हैं। खरीदारी से पहले किसान को अपने नजदीकी डीलर से मौजूदा कीमत, उपलब्ध वेरिएंट, फाइनेंस विकल्प और सर्विस संबंधी जानकारी जरूर प्राप्त करनी चाहिए।

यूपी के किसानों को बड़ी राहत, GPS से होगी गन्ना ढुलाई की निगरानी

यूपी में गन्ना क्रय केंद्रों से लेकर चीनी मिलों तक वाहनों की लाइव ट्रैकिंग होगी

उत्तर प्रदेश में गन्ना किसानों के हित में योगी सरकार लगातार नई पहल कर रही है। किसानों को समय पर गन्ने का भुगतान सुनिश्चित करने के साथ अब गन्ना परिवहन व्यवस्था को भी डिजिटल तकनीक से जोड़ने की तैयारी की जा रही है। प्रदेश में गन्ना क्रय केंद्रों से लेकर चीनी मिलों तक गन्ना पहुंचाने वाले वाहनों की जीपीएस के माध्यम से लाइव ट्रैकिंग की जाएगी। इस व्यवस्था का उद्देश्य गन्ने की ढुलाई में पारदर्शिता बढ़ाना और किसानों को होने वाले नुकसान को कम करना है। सरकार की इस पहल से प्रदेश के लाखों गन्ना किसानों को सीधा लाभ मिलने की उम्मीद है।

गन्ना परिवहन व्यवस्था होगी पूरी तरह डिजिटल

प्रदेश के गन्ना आयुक्त मिनिस्ती एस के अनुसार, गन्ना आपूर्ति श्रृंखला को डिजिटल तकनीक से जोड़ने की दिशा में व्हीकल ट्रैकिंग सिस्टम पर विचार किया जा रहा है। इसके तहत गन्ना क्रय केंद्रों से चीनी मिल गेट तक गन्ना ले जाने वाले वाहनों को जीपीएस आधारित निगरानी प्रणाली से जोड़ा जाएगा। इसके लिए एक केंद्रीय कंट्रोल रूम स्थापित करने की योजना है। यहां से अधिकारी गन्ने से लदे वाहनों की आवाजाही पर 24 घंटे नजर रख सकेंगे। इससे यह पता लगाना आसान होगा कि वाहन निर्धारित मार्ग पर चल रहा है या नहीं और गन्ना समय पर मिल तक पहुंच रहा है या नहीं।

केंद्रीय कंट्रोल रूम से होगी 24 घंटे निगरानी

नई व्यवस्था में केंद्रीय कंट्रोल रूम की अहम भूमिका होगी। यहां तैनात अधिकारी जीपीएस के माध्यम से गन्ना ढुलाई करने वाले वाहनों की रियल-टाइम लोकेशन देख सकेंगे। यदि कोई वाहन निर्धारित मार्ग से हटता है, अनावश्यक रूप से रुकता है या लंबे समय तक किसी स्थान पर ठहरता है तो इसकी जानकारी निगरानी व्यवस्था के माध्यम से मिल सकेगी। इससे परिवहन प्रक्रिया में होने वाली अनियमितताओं पर तत्काल नजर रखी जा सकेगी। सरकार का मानना है कि डिजिटल निगरानी से गन्ना आपूर्ति व्यवस्था अधिक व्यवस्थित, पारदर्शी और जवाबदेह बनेगी।

गन्ना कटाई के बाद 24 घंटे में मिल तक पहुंचाने पर जोर

गन्ना आयुक्त ने बताया कि खेत से गन्ने की कटाई के बाद उसे चीनी मिल तक पहुंचाने में देरी होने से किसानों को नुकसान उठाना पड़ता है। लंबे समय तक खेत या रास्ते में पड़े रहने के कारण गन्ने में नमी कम हो सकती है और उसका वजन प्रभावित हो सकता है। प्रस्तावित व्हीकल ट्रैकिंग सिस्टम के जरिए कटाई के बाद गन्ने को 24 घंटे के भीतर चीनी मिल तक पहुंचाने पर जोर दिया जाएगा। समयबद्ध परिवहन से गन्ने की ताजगी बनाए रखने और उसकी गुणवत्ता को बेहतर रखने में मदद मिलेगी।

अनधिकृत ठहराव और हेराफेरी पर लगेगी रोक

गन्ना ढुलाई के दौरान वाहनों के अनावश्यक रुकने या निर्धारित मार्ग से हटने जैसी समस्याओं पर नई तकनीक से नियंत्रण पाया जा सकेगा। लाइव ट्रैकिंग के जरिए अधिकारियों को वाहन की वास्तविक स्थिति की जानकारी लगातार मिलती रहेगी। इससे अनधिकृत ठहराव और किसी भी तरह की हेराफेरी की संभावना कम होगी। साथ ही परिवहन व्यवस्था में जवाबदेही तय करना भी आसान होगा। गन्ने की आपूर्ति श्रृंखला में पारदर्शिता बढ़ने से चीनी मिलों और किसानों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित होने की उम्मीद है।

प्राकृतिक वजन बरकरार रहने से किसानों को फायदा

गन्ने की कटाई के बाद जितनी जल्दी उसे मिल तक पहुंचाया जाता है, उतना ही उसकी ताजगी और प्राकृतिक वजन बनाए रखने में मदद मिलती है। धूप और हवा के लंबे संपर्क में रहने से गन्ना सूख सकता है, जिसका असर उसके वजन पर पड़ सकता है। समयबद्ध परिवहन से इस समस्या को कम किया जा सकेगा। इससे किसानों को वजन में होने वाली संभावित कटौती और उससे जुड़े वित्तीय नुकसान से राहत मिलने की उम्मीद है। इस तरह जीपीएस आधारित निगरानी केवल परिवहन व्यवस्था को बेहतर नहीं करेगी, बल्कि किसानों की आय और हितों की सुरक्षा में भी सहायक हो सकती है।

48 लाख गन्ना किसान परिवारों को मिलेगा लाभ

उत्तर प्रदेश देश के प्रमुख गन्ना उत्पादक राज्यों में शामिल है और प्रदेश में बड़ी संख्या में किसान गन्ने की खेती पर निर्भर हैं। सरकार के अनुसार, समय पर गन्ने की आपूर्ति और भुगतान की बेहतर व्यवस्था से प्रदेश के करीब 48 लाख गन्ना किसान परिवारों को

आर्थिक मजबूती मिल सकती है। गन्ना किसानों की आय और भुगतान व्यवस्था मजबूत होने का सकारात्मक असर ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर भी पड़ सकता है। सरकार का मानना है कि गन्ना क्षेत्र को मजबूत बनाकर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को व्यापक स्तर पर गति दी जा सकती है।

2025-26 पेराई सत्र में 30,831.81 करोड़ रुपये का भुगतान

योगी सरकार की ओर से गन्ना किसानों को समयबद्ध और नियमित भुगतान पर भी जोर दिया जा रहा है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, पेराई सत्र 2025-26 में अब तक गन्ना किसानों को 30,831.81 करोड़ रुपये का भुगतान किया जा चुका है। सरकार का दावा है कि किसानों के गन्ना मूल्य भुगतान को प्राथमिकता दी जा रही है। भुगतान व्यवस्था में सुधार के साथ यदि परिवहन प्रक्रिया भी डिजिटल और पारदर्शी होती है, तो किसानों को गन्ना बेचने से लेकर भुगतान प्राप्त करने तक की पूरी प्रक्रिया में राहत मिल सकती है।

गन्ना क्षेत्र से अर्थव्यवस्था को मिलेगी नई मजबूती

गन्ना किसानों के हित में उठाए जा रहे कदमों को प्रदेश की अर्थव्यवस्था से भी जोड़कर देखा जा रहा है। समय पर गन्ना मिलों तक पहुंचेगा, किसानों को उनके उत्पादन का बेहतर मूल्य और समय पर भुगतान मिलेगा तथा चीनी उद्योग की आपूर्ति श्रृंखला अधिक प्रभावी होगी तो इसका सकारात्मक असर पूरे क्षेत्र पर पड़ सकता है। सरकार का लक्ष्य उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को एक ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाना है और इस लक्ष्य में गन्ना किसानों की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जा रही है। जीपीएस आधारित परिवहन व्यवस्था इसी दिशा में तकनीक के इस्तेमाल से पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाने वाली महत्वपूर्ण पहल साबित हो सकती है।

ब्रिक्स नई दिल्ली घोषणा-पत्र: कृषि और किसानों के लिए 4 बड़ी पहल

नई दिल्ली घोषणा-पत्र में क्या है खास?

नई दिल्ली में आयोजित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के पहले सत्र में सदस्य देशों के बीच जलवायु परिवर्तन, कृषि, महिला सशक्तीकरण, शिक्षा और तकनीक समेत कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर सहमति बनी। सम्मेलन में जारी नई दिल्ली घोषणा-पत्र में वैश्विक स्तर के कई अहम विषयों को शामिल किया गया है। इसमें पेरिस समझौते के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता के साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), बौद्धिक संपदा, दुर्लभ खनिज, अंतरिक्ष सहयोग और विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) में सुधार जैसे मुद्दों पर भी जोर दिया गया है। कृषि और किसानों से जुड़े सहयोग को भी घोषणा-पत्र में खास जगह मिली है। सदस्य देशों के बीच कृषि तकनीक, अनुभव और बेहतर खेती के तरीकों को साझा करने पर जोर दिया गया है।

कृषि और किसानों के मुद्दों को क्यों मिली जगह?

ब्रिक्स देशों की अर्थव्यवस्था और लोगों की आजीविका में कृषि की बड़ी भूमिका है। बड़ी संख्या में लोग खेती, पशुपालन, खाद्य प्रसंस्करण और इससे जुड़े कामों पर निर्भर हैं। ऐसे में कृषि से जुड़े मुद्दे सभी सदस्य देशों के लिए महत्वपूर्ण हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में बदलाव, अनियमित बारिश, सूखा और बाढ़ जैसी समस्याएं खेती को प्रभावित कर रही हैं। इसके अलावा खेती की बढ़ती लागत, पानी की कमी और बाजार में उतार-चढ़ाव भी किसानों के सामने बड़ी चुनौतियां हैं। ऐसे में सदस्य देशों के बीच कृषि से जुड़ी तकनीक, अनुसंधान और अनुभव साझा करने से नए समाधान खोजने में मदद मिल सकती है। इससे टिकाऊ खेती और खाद्य सुरक्षा को भी मजबूती मिल सकती है।

किसानों से जुड़ी चार नई पहलों पर जोर

नई दिल्ली घोषणा-पत्र में कृषि और किसानों से जुड़े चार नए सहयोग क्षेत्रों को आगे बढ़ाने पर सहमति बनी है। इनका उद्देश्य ब्रिक्स देशों के बीच कृषि क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करना है। इसके तहत कृषि से जुड़ी तकनीकी जानकारी, अनुभव और बेहतर खेती के तरीकों को साझा करने पर जोर दिया जा रहा है। इससे अलग-अलग देशों में विकसित कृषि तकनीकों की जानकारी दूसरे देशों तक पहुंच सकती है। कृषि अनुसंधान और नवाचार को भी बढ़ावा मिलने की संभावना है। कम पानी में खेती, मौसम के अनुसार फसल प्रबंधन, मिट्टी की गुणवत्ता बनाए रखने और खेती की लागत कम करने जैसे उपाय इस सहयोग के तहत महत्वपूर्ण हो सकते हैं। हालांकि, इन पहलों का वास्तविक लाभ इस बात पर निर्भर करेगा कि सदस्य देश इन्हें जमीन पर किस तरह लागू करते हैं।

जलवायु परिवर्तन से निपटने पर भी जोर

घोषणा-पत्र में जलवायु परिवर्तन को भी प्रमुख मुद्दा बनाया गया है। इसमें पेरिस समझौते के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता जताई गई है। बदलते मौसम का खेती पर सीधा असर पड़ता है। तापमान बढ़ने, बारिश के समय में बदलाव, सूखा और अचानक भारी बारिश से फसलों को नुकसान हो सकता है। इसका असर किसानों की आय और खाद्य उत्पादन पर भी पड़ सकता है। इसलिए जलवायु अनुकूल खेती को बढ़ावा देना जरूरी है। पानी का बेहतर प्रबंधन, मिट्टी और प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा तथा कम संसाधनों में टिकाऊ उत्पादन जैसे उपाय किसानों के लिए उपयोगी हो सकते हैं। ब्रिक्स देशों के बीच ऐसे उपायों और तकनीकों का आदान-प्रदान कृषि क्षेत्र को बदलते मौसम के अनुकूल बनाने में मदद कर सकता है।

एआई और डिजिटल तकनीक से खेती को मिल सकता है फायदा

नई दिल्ली घोषणा-पत्र में एआई और डिजिटल तकनीक को भी महत्व दिया गया है। कृषि में तकनीक की मदद से मौसम की जानकारी, फसल की निगरानी, रोगों की पहचान और सिंचाई प्रबंधन जैसे काम बेहतर तरीके से किए जा सकते हैं। उपग्रह और डिजिटल प्लेटफॉर्म किसानों को फसल और मौसम से जुड़ी जानकारी देने में मदद कर सकते हैं। यदि ब्रिक्स देशों के बीच कृषि से जुड़ी नई तकनीक और डिजिटल समाधान साझा किए जाते हैं, तो किसानों को खेती से जुड़े फैसले लेने में बेहतर तकनीकी सहायता मिल सकती है। हालांकि, इसके लिए किसानों तक इंटरनेट, डिजिटल उपकरण और तकनीकी प्रशिक्षण की पहुंच बढ़ाना जरूरी होगा। स्थानीय भाषाओं में जानकारी उपलब्ध कराना भी महत्वपूर्ण रहेगा।

दुर्लभ खनिज और अंतरिक्ष सहयोग भी अहम

घोषणा-पत्र में दुर्लभ खनिज और अंतरिक्ष सहयोग जैसे विषय भी शामिल हैं। दुर्लभ खनिज आधुनिक तकनीक और कई उद्योगों के लिए महत्वपूर्ण हैं। वहीं अंतरिक्ष तकनीक का इस्तेमाल मौसम की जानकारी, आपदा प्रबंधन और पृथ्वी की निगरानी में किया जाता है। कृषि के लिए भी इसका म हत्व है। उपग्रहों

से प्राप्त जानकारी के जरिए फसल, भूमि, मौसम और जल संसाधनों की स्थिति का पता लगाया जा सकता है। इससे फसल प्रबंधन और कृषि योजनाओं को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है। बाढ़ और सूखे जैसी प्राकृतिक आपदाओं की निगरानी में भी अंतरिक्ष तकनीक उपयोगी हो सकती है।

डब्ल्यूटीओ सुधार और बौद्धिक संपदा पर चर्चा

नई दिल्ली घोषणा-पत्र में डब्ल्यूटीओ में सुधार और बौद्धिक संपदा से जुड़े मुद्दों को भी जगह दी गई है। वैश्विक व्यापार व्यवस्था में बदलाव का असर कृषि उत्पादों के अंतरराष्ट्रीय कारोबार पर पड़ सकता है। कृषि निर्यात बढ़ाने के लिए बाजार तक पहुंच, व्यापार नियम और देशों के बीच सहयोग जरूरी है। ब्रिक्स देशों के बीच बेहतर समन्वय से कृषि व्यापार से जुड़े मुद्दों पर साझा प्रयास किए जा सकते हैं। वहीं बौद्धिक संपदा के तहत कृषि अनुसंधान, नई तकनीक, बीज और वैज्ञानिक नवाचार से जुड़े अधिकार महत्वपूर्ण हैं। इन क्षेत्रों में सहयोग से नई तकनीक और अनुसंधान को बढ़ावा मिल सकता है।

किसानों के लिए क्या मायने रखता है?

नई दिल्ली घोषणा-पत्र में कृषि को लेकर बनी सहमति को किसानों के लिए सीधे मिलने वाली नई सरकारी योजना या आर्थिक सहायता के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। इसका मुख्य उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कृषि सहयोग को मजबूत करना है। यदि तय किए गए सहयोग को प्रभावी तरीके से लागू किया जाता है, तो लंबे समय में किसानों को नई कृषि तकनीक, जलवायु अनुकूल खेती, डिजिटल समाधान और बेहतर कृषि ज्ञान का लाभ मिल सकता है। खाद्य सुरक्षा और कृषि व्यापार के क्षेत्र में भी सहयोग बढ़ सकता है। कुल मिलाकर, घोषणा-पत्र में कृषि और किसानों से जुड़े मुद्दों को शामिल किया जाना यह दिखाता है कि खाद्य सुरक्षा, टिकाऊ खेती, जलवायु परिवर्तन और कृषि तकनीक अब वैश्विक सहयोग के महत्वपूर्ण विषय हैं। इन फैसलों का वास्तविक फायदा किसानों तक कितना पहुंचेगा, यह आगे होने वाले काम और उनके प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करेगा।

बिजनेस आइडिया: ये 5 कृषि व्यवसाय देंगे बंपर मुनाफा

गांव में शुरू करें ये टॉप 5 कृषि बिजनेस - होगा अधिक लाभ

आज के समय में किसान केवल पारंपरिक खेती पर निर्भर रहकर ही नहीं, बल्कि कृषि से जुड़े अन्य व्यवसाय शुरू करके भी अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं। कई ऐसे व्यवसाय हैं जिन्हें कम निवेश में शुरू किया जा सकता है और इनमें मुनाफा भी काफी अच्छा मिलता है। खास बात यह है कि इन कामों को खेती के साथ आसानी से किया जा सकता है। पशुपालन, पोल्ट्री, मछली पालन और मधुमक्खी पालन जैसे व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। सरकार भी किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए इन व्यवसायों पर लोन और सब्सिडी की सुविधा उपलब्ध करा रही है। आइए जानते हैं खेती के साथ शुरू किए जा सकने वाले ऐसे 5 फायदे वाले व्यवसायों के बारे में।

1. गाय - भैंस पालन व्यवसाय

Dairy Farming किसानों के लिए सबसे लाभदायक व्यवसायों में से एक माना जाता है। किसान अच्छी नस्ल की गाय या भैंस पालकर दूध उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। इसकी शुरुआत छोटे स्तर पर दो गाय या दो भैंस से भी की जा सकती है। दूध की लगातार बढ़ती मांग के कारण डेयरी व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्रों में कमाई का अच्छा माध्यम बन चुका है। यदि किसान बड़े स्तर पर डेयरी फार्म शुरू करना चाहते हैं, तो बैंक और कई सरकारी संस्थाएं इसके लिए लोन सुविधा भी प्रदान करती हैं। कई योजनाओं के तहत डेयरी व्यवसाय के लिए 5 लाख से 10 लाख रुपये तक का ऋण उपलब्ध कराया जाता है। इसके लिए आधार कार्ड, बिजली बिल, एनओसी, फोटो और अन्य जरूरी दस्तावेज जमा करने होते हैं। सत्यापन पूरा होने के बाद पशुओं की संख्या और डेयरी के आकार के अनुसार ऋण मंजूर किया जाता है। सरकार की ओर से कई योजनाओं में सब्सिडी का भी लाभ दिया जाता है।

2. मधुमक्खी पालन व्यवसाय

Beekeeping खेती के साथ किया जाने वाला एक बेहतरीन व्यवसाय माना जाता है। इसमें कम जगह और कम लागत में अच्छी कमाई की जा सकती है। शहद की बढ़ती मांग के कारण मधुमक्खी पालन ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का अच्छा साधन बन चुका है। केंद्र और राज्य सरकारें इस व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चला रही हैं। "मीठी क्रांति" जैसी योजनाओं के तहत कृषि और उद्यान विभाग किसानों को प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करते हैं। किसानों को मधुमक्खियों के पालन के लिए बॉक्स भी उपलब्ध कराए जाते हैं। National Bee Board और NABARD ने मिलकर मधुमक्खी पालन के लिए फाइनेंसिंग योजनाएं भी शुरू की हैं। इस व्यवसाय पर सरकार 80 से 85 प्रतिशत तक सब्सिडी देती है, जिससे किसान कम लागत में इसे शुरू कर सकते हैं।

3. मछली पालन व्यवसाय

Fish Farming भी किसानों के लिए तेजी से बढ़ता हुआ व्यवसाय है। बाजार में मछली के मांस और तेल की मांग लगातार बढ़ रही है, जिससे यह व्यवसाय लाभदायक बन गया है। यदि किसान के पास तालाब है तो वहां आसानी से मछली पालन किया जा सकता है। जिन किसानों के पास तालाब नहीं है, वे टैंक बनाकर भी इस व्यवसाय की शुरुआत कर सकते हैं। कम लागत में अधिक मुनाफा देने वाला यह व्यवसाय सरकार द्वारा भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। मछली पालकों को बैंकों के माध्यम से क्रेडिट कार्ड सुविधा दी जाती है, जिसके जरिए बिना गारंटी के 1.60 लाख रुपये तक का ऋण लिया जा सकता है। आवश्यकता पड़ने पर 3 लाख रुपये तक का लोन भी उपलब्ध कराया जाता है। आधुनिक तकनीक अपनाकर किसान इस व्यवसाय से बेहतर कमाई कर सकते हैं।

4. मुर्गी पालन व्यवसाय

अंडे और चिकन की बढ़ती मांग के कारण Poultry Farming तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। गांवों से लेकर शहरों तक लोग इसे व्यवसाय के रूप में अपना रहे हैं। इस व्यवसाय को शुरू करने के लिए ज्यादा तकनीकी जानकारी की जरूरत नहीं होती, लेकिन उचित जगह और साफ-सफाई का ध्यान रखना जरूरी होता है। पोल्ट्री फार्म के लिए पर्याप्त जगह और बिजली की व्यवस्था होना जरूरी है। माना जाता है कि एक मुर्गी के लिए कम से कम एक वर्ग फुट जगह होनी चाहिए। यदि जगह थोड़ी अधिक हो, तो अंडों और चूजों के नुकसान की संभावना कम हो जाती है। इस व्यवसाय के लिए बैंक आसानी से लोन उपलब्ध कराते हैं और NABARD की सहायता से वित्तीय मदद भी ली जा सकती है। सरकार भी पोल्ट्री व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी प्रदान करती है। सामान्य वर्ग को लगभग 25 प्रतिशत और अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग को 35 प्रतिशत तक सब्सिडी का लाभ दिया जाता है। इससे छोटे किसान भी आसानी से इ स व्यवसाय की शुरुआत

कर सकते हैं।

5. बकरी पालन व्यवसाय

Goat Farming भी किसानों के लिए कम लागत वाला और फायदे का व्यवसाय है। इसे बहुत कम पूंजी में शुरू किया जा सकता है और इसके रखरखाव में भी ज्यादा खर्च नहीं आता। बकरियां झाड़ियों, पेड़ों की पत्तियों और घास पर आसानी से अपना भोजन कर लेती हैं, जिससे चारे पर खर्च कम होता है।

बकरी पालन मुख्य रूप से दूध और मांस उत्पादन के लिए किया जाता है। किसान अपनी जरूरत और बाजार की मांग के अनुसार नस्ल का चयन कर सकते हैं। कई राज्य सरकारें बकरी पालन को बढ़ावा देने के लिए सहायता और प्रशिक्षण भी उपलब्ध कराती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में यह व्यवसाय रोजगार और अतिरिक्त आय का अच्छा साधन बनता जा रहा है।

खेती के साथ कृषि आधारित व्यवसाय शुरू करना किसानों के लिए अतिरिक्त आय का मजबूत स्रोत बन सकता है। डेयरी, बकरी पालन, मुर्गी पालन, मछली पालन और मधुमक्खी पालन जैसे व्यवसाय कम लागत में अच्छा मुनाफा देने वाले विकल्प हैं। सरकार की ओर से मिलने वाली सब्सिडी और लोन सुविधाओं के कारण किसान आसानी से इन व्यवसायों की शुरुआत कर सकते हैं। सही योजना और मेहनत के साथ किसान इन व्यवसायों से अपनी आर्थिक स्थिति को और मजबूत बना सकते हैं।

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर – पशुओं के स्वास्थ्य का प्राकृतिक सुरक्षा कवच

आपके पशुओं के लिए हर्बल हेल्थ बूस्टर – एनीमल टॉक्सआउट पाउडर

Animax Toxout Powder: पशुपालन में पशुओं का स्वास्थ्य और उनकी उत्पादक क्षमता बहुत महत्वपूर्ण होती है। यदि पशु स्वस्थ न हों, तो दुग्ध उत्पादन, प्रजनन क्षमता और उनकी सामान्य गतिविधियों पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। ऐसे में पशुओं के शरीर में जमा हुए टॉक्सिन या हानिकारक तत्वों को बाहर निकालना अत्यंत आवश्यक है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए एनीमल टॉक्सआउट पाउडर को विशेष रूप से तैयार किया गया है। यह एक हर्बल वेटरनरी दवा है जो प्राकृतिक तत्वों से निर्मित है और पशुओं के शरीर को अंदर से शुद्ध कर उन्हें स्वस्थ रखने में मदद करती है।

एनीमल टॉक्स आउट पाउडर की मुख्य विशेषताएं

- प्रोडक्ट का नाम - एनीमल टॉक्सआउट पाउडर (Animal Toxout Powder)

- दवा का प्रकार - हर्बल वेटरनरी मेडिसिन
- भौतिक रूप - पाउडर
- सामग्री (Ingredients) - विशेष हर्बल सॉल्यूशन कंपाउंड (नीम की पत्तियों का रस, सोडियम फॉर्मेट, एक्टिवेटेड चारकोल व फाइलीसिलिकेट्स से युक्त एक शक्तिशाली टॉक्सिन बाइंडर)
- उपयोग हेतु अनुशंसित - गाय, भैंस, बैल, बछड़ा आदि सभी प्रकार के पशुओं के लिए
- पैकिंग - 1 किलोग्राम , 2 किलोग्राम, 25 किलोग्राम पैक
- स्टोरेज - सामान्य कमरे के तापमान पर रखें

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर का उपयोग और लाभ

पशुओं के शरीर में समय के साथ खराब आहार, दूषित पानी, कीटनाशकों या रासायनिक दवाओं के कारण विषैले तत्व जमा हो सकते हैं। ये टॉक्सिन पशुओं में कमजोरी, अपच, भूख न लगना, दूध की मात्रा कम होना, रोगों की संभावना बढ़ना और थकान जैसी समस्याएँ पैदा करते हैं। एनीमल टॉक्सआउट पाउडर इन सभी समस्याओं को खत्म करने में अत्यंत कारगर है।

पशुपालक मित्रों, निम्नलिखित परिस्थितियों में टॉक्सआउट पाउडर का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए

- जब पशुओं को बार-बार थनेला हो रहा है।
- जब पशु लगातार पतला गोबर कर रहा है।
- जब पशु के दूध से बदबू आ रही है।
- जब दूध की दही अच्छी नहीं जम रही है।
- जब पशु इलाज के बाद भी बार-बार बीमार पड़ रहा हो।

पशुपालक मित्रों, फसलों में अत्याधुनिक खाद के इस्तेमाल के कारण आजकल हम खाने के माध्यम से जो जहर खा रहे हैं, उसके प्रभाव को कम करने के लिए टॉक्सआउट पाउडर का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए।

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर के मुख्य लाभ

1. एनीमल टॉक्सआउट पाउडर टॉक्सिन बाहर निकालता है: यह पशुओं के शरीर में जमा हानिकारक तत्वों को प्राकृतिक रूप से बाहर निकालता है।
2. पाचन तंत्र मजबूत: यह पाचन शक्ति एवं चयापचय प्रक्रिया में सुधार करता है।
3. भूख बढ़ाता है: एनीमल टॉक्सआउट पाउडर भूख कम होने वाली स्थिति में भी यह दवा भूख बढ़ाकर शरीर में पोषण पहुँचाती है।
4. दूध उत्पादन में वृद्धि: एनीमल टॉक्सआउट पाउडर गाय-भैंसों में दूध की मात्रा और गुणवत्ता बढ़ाने में मददगार।
5. रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए: एनीमल टॉक्सआउट पाउडर पशुओं को बीमारियों से लड़ने की क्षमता देता है।
6. पूरी तरह सुरक्षित: एनीमल टॉक्सआउट पाउडर में किसी भी रासायनिक तत्व का प्रयोग नहीं किया गया है, इसलिए यह बिना किसी साइड इफेक्ट के है।

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर को कैसे उपयोग करें

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर की मात्रा पशु के वजन और स्थिति के अनुसार वेटरनरी डॉक्टर की सलाह से दें। एनीमल टॉक्सआउट पाउडर को चारे या दाने में मिलाकर आसानी से पशु को खिलाया जा सकता है।

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर की खुराक

बड़े पशुओं में – 50 ग्राम प्रतिदिन
छोटे पशुओं में – 25 ग्राम प्रतिदिन
(1.5 – 2 किलोग्राम प्रति टन दाना के लिए)

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर की व्यापार और आपूर्ति संबंधित जानकारी

Global 4WD Expert
Solis
IN COLLABORATION WITH
YANMAR
INTRODUCING THE ALL-NEW SOLIS S90
THE SUPREME POWER OF ADVANCED JAPANESE TECHNOLOGY
POWERPACK PERFORMER
WITH 12F+12R SPEEDS
NEW S-TECH ENGINE
WITH 90HP HIGH POWER
S-BOOST HYDRAULICS
WITH UPTO 3500KG LIFT CAPACITY
AC CABIN
WITH WIDE & OPEN PLATFORM
Solis
90 HP

- न्यूनतम ऑर्डर मात्रा - 100 पैक
- भुगतान विधि - कैश इन एडवांस
- सप्लाई क्षमता - 5000 पैक प्रति माह
- डिलीवरी समय - 7-10 दिन
- उपलब्धता - पूरे भारत में डिलीवरी

क्यों चुनें एनीमल टॉक्सआउट पाउडर?

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर हर्बल और सुरक्षित होता है और ये इस्तेमाल में आसान है। पाउडर लंबे समय तक असरदार रहता है और बेहतर पशु स्वास्थ्य और उच्च उत्पादकता के लिए किफायती और विश्वसनीय है। अगर आप अपने पशुओं को हर प्रकार की अंदरूनी अशुद्धियों और विषाक्त तत्वों से मुक्त रखना चाहते हैं और उनकी उत्पादन क्षमता बढ़ाना चाहते हैं, तो एनीमल टॉक्सआउट पाउडर एक श्रेष्ठ और लाभकारी विकल्प है। यह प्राकृतिक तत्वों से बना है, इसलिए इसके इस्तेमाल से किसी भी प्रकार का साइड इफेक्ट नहीं होता। इसका नियमित उपयोग आपके पशुओं को स्वस्थ, सक्रिय और उत्पादक बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कम खर्च में तैयार करें पशुओं का पौष्टिक चारा, दूध उत्पादन भी बढ़ेगा

गर्मियों में पशुओं के लिए पौष्टिक चारा बनाना क्यों जरूरी

गर्मियों के मौसम में पशुपालकों को सबसे बड़ी चुनौती हरे चारे की कमी और महंगे पशु आहार की होती है। तापमान बढ़ने के साथ खेतों में हरा चारा कम हो जाता है, जबकि बाजार में मिलने वाला संतुलित पशु आहार काफी महंगा पड़ता है। इसका सीधा असर पशुओं के स्वास्थ्य, दूध उत्पादन और वजन पर दिखाई देता है।

कई बार पोषण की कमी के कारण पशु कमजोर होने लगते हैं और उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी घट जाती है। ऐसे समय में किसान यदि कम लागत में पौष्टिक चारा तैयार कर लें, तो पशुपालन को लाभकारी बनाया जा सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार भूसे का यूरिया उपचार एक ऐसी वैज्ञानिक तकनीक है, जो सूखे भूसे को पौष्टिक पशु आहार में बदल सकती है। यह तरीका आसान होने के साथ-साथ बेहद किफायती भी माना जाता है।

देश में चारे की कमी बनी बड़ी समस्या

भारत दुनिया के सबसे बड़े पशुधन वाले देशों में शामिल है। देश में 53 करोड़ से अधिक पशुधन मौजूद है, लेकिन इनके लिए पर्याप्त पौष्टिक चारे की उपलब्धता आज भी बड़ी समस्या बनी हुई है। अधिकांश किसान गेहूं और धान के भूसे पर निर्भर रहते हैं, क्योंकि यह आसानी से उपलब्ध हो जाता है। हालांकि, सामान्य भूसे में पोषक तत्व बहुत कम होते हैं। इसमें प्रोटीन की मात्रा करीब 3 प्रतिशत या उससे भी कम होती है, जिससे पशुओं की पोषण जरूरत पूरी नहीं हो पाती। लगातार ऐसे चारे का उपयोग करने से पशुओं की वृद्धि रुक सकती है और दूध उत्पादन भी प्रभावित होता है। यही वजह है, कि वैज्ञानिक लंबे समय से भूसे की गुणवत्ता सुधारने पर जोर देते रहे हैं। यूरिया उपचार इसी दिशा में एक कारगर उपाय माना जाता है।

यूरिया उपचारित भूसा क्यों है बेहतर विकल्प

विशेषज्ञों के अनुसार भूसे का यूरिया उपचार करने से उसकी पौष्टिकता कई गुना बढ़ जाती है। इस प्रक्रिया में यूरिया से बनने वाली अमोनिया भूसे के रेशों को मुलायम बनाती है और उसकी पाचन क्षमता को बेहतर करती है। सामान्य भूसे में जहां प्रोटीन की मात्रा लगभग 3 प्रतिशत होती है, वहीं उपचार के बाद यह 6 से 8 प्रतिशत तक पहुंच सकती है। इसके अलावा भूसे की ऊर्जा क्षमता और पाचनशीलता में भी सुधार होता है। उपचारित भूसा स्वाद में भी बेहतर हो जाता है, जिससे पशु इसे आसानी से खाते हैं। यही कारण है कि पशुपालकों के बीच यह तकनीक तेजी से लोकप्रिय हो रही है। कम खर्च में पौष्टिक चारा तैयार होने से किसानों की लागत घटती है और पशुओं को बेहतर पोषण मिल पाता है।

उपचारित भूसे से पशुपालकों को मिलते हैं कई फायदे

यूरिया उपचारित भूसा पशुओं के लिए कई तरह से फायदेमंद साबित होता है। उपचार के बाद भूसा नरम और स्वादिष्ट हो जाता है, जिससे पशु इसे चाव से खाते हैं और चारे की बर्बादी कम होती है। अधिक पोषण मिलने से पशुओं की सेहत बेहतर रहती है और दूध उत्पादन में भी सुधार देखा जा सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह का चारा खिलाने से महंगे दाने और सघन आहार की जरूरत लगभग 30 प्रतिशत तक कम हो सकती है। इससे पशुपालकों का खर्च घटता है और मुनाफा बढ़ता है। बछड़ों और बछड़ियों को यह चारा खिलाने पर उनका वजन तेजी से बढ़ता है और शरीर मजबूत बनता है। गर्मियों में जब हरे चारे की भारी कमी होती है, तब यह तकनीक पशुपालकों के लिए बड़ी राहत साबित हो सकती है।

सामान्य और उपचारित भूसे में कितना अंतर

सामान्य भूसे और यूरिया उपचारित भूसे के बीच पोषण स्तर में बड़ा अंतर देखने को मिलता है। साधारण भूसे में प्रोटीन केवल 3 से 3.5 प्रतिशत तक होता है, जबकि उपचारित भूसे में यह बढ़कर 6 से 8 प्रतिशत तक पहुंच जाता है। पाच्य प्रोटीन की मात्रा भी काफी बढ़ जाती है, जिससे पशु इसे बेहतर तरीके से पचा पाते हैं। ऊर्जा स्तर सामान्य भूसे में लगभग 40 से 45 प्रतिशत होता है, लेकिन उपचारित भूसे में यह 50 से 55 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। सबसे बड़ा सुधार पाचनशीलता में देखा जाता है। सामान्य भूसे की पाचन क्षमता जहां 40 से 45 प्रतिशत रहती है, वहीं उपचार के बाद यह 70 से 75 प्रतिशत तक हो सकती है। यही कारण है कि वैज्ञानिक इसे पशुपालन के लिए बेहद उपयोगी तकनीक मानते हैं।

ऐसे करें भूसे का यूरिया उपचार

भूसे का यूरिया उपचार करना बेहद आसान है और किसान इसे अपने घर या खेत पर ही कर सकते हैं। सबसे पहले 4 किलोग्राम यूरिया को 40 लीटर साफ पानी में अच्छी तरह घोल लें। इसके बाद लगभग 1 क्विंटल सूखे भूसे को समतल जमीन पर

3 से 4 इंच मोटी परत में फैला दें। अब तैयार घोल को स्प्रेयर या फव्वारे की मदद से भूसे पर समान रूप से छिड़कें, ताकि पूरा भूसा हल्का गीला हो जाए। इसके बाद भूसे को पैरों से दबाकर सघन करें। इसी तरह एक के ऊपर एक कई परतें बनाई जा सकती हैं और हर परत पर घोल का छिड़काव करना जरूरी होता है। अंत में पूरे ढेर को प्लास्टिक शीट से अच्छी तरह ढक दें, ताकि हवा अंदर न जा सके। गर्मियों में इसे कम से कम 3 सप्ताह और सर्दियों में लगभग 4 सप्ताह तक बंद अवस्था में रखना चाहिए। इस दौरान यूरिया से अमोनिया बनती है, जो भूसे को मुलायम और पौष्टिक बनाती है।

पशुओं को कैसे खिलाएं उपचारित चारा

जब उपचार प्रक्रिया पूरी हो जाए, तब जरूरत के अनुसार भूसे को ढेर से निकालकर उपयोग किया जा सकता है। शुरुआत में इस भूसे को लगभग आधे घंटे तक खुली हवा में फैला देना चाहिए, ताकि अतिरिक्त अमोनिया निकल जाए। इसके बाद इसे पशुओं को खिलाया जा सकता है। शुरुआत में पशुओं को थोड़ी मात्रा में यह चारा देना चाहिए, ताकि वे इसकी आदत डाल सकें। धीरे-धीरे इसकी मात्रा बढ़ाई जा सकती है। एक बार पशु इसके स्वाद के अभ्यस्त हो जाएं, तो इसे सीधे भी खिलाया जा सकता है। उपचारित भूसा सूखे मौसम में लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है, जिससे पूरे साल चारे की उपलब्धता बनी रहती है। यही कारण है कि यह तकनीक छोटे और मध्यम पशुपालकों के लिए बेहद उपयोगी मानी जाती है।

चारा तैयार करते समय बरतें जरूरी सावधानियां

यूरिया उपचारित भूसा तैयार करते समय कुछ जरूरी सावधानियों का पालन करना बेहद आवश्यक है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यूरिया घोल को हमेशा पशुओं और बच्चों की पहुंच से दूर रखा जाए। यूरिया को कभी भी सीधे पशुओं को नहीं खिलाना चाहिए, क्योंकि यह नुकसानदायक हो सकता है। उपचारित भूसे को कम से कम 3 सप्ताह बाद ही उपयोग में लाना चाहिए, ताकि प्रक्रिया पूरी तरह सफल हो सके। प्लास्टिक कवर को अच्छी तरह बंद रखना जरूरी है, क्योंकि हवा अंदर जाने से उपचार प्रभावित हो सकता है। इसके अलावा भूसे पर यूरिया घोल का समान रूप से छिड़काव करना भी बेहद जरूरी होता है। विशेषज्ञों का मानना है, कि यदि किसान फसल कटाई के समय ही भूसे का उपचार कर लें, तो पूरे साल पौष्टिक चारे की चिंता काफी हद तक खत्म हो सकती है। सही विधि और सावधानी के साथ अपनाई गई यह तकनीक पशुपालकों के लिए कम खर्च में अधिक मुनाफा दिलाने का प्रभावी उपाय साबित हो सकती है।

मेरीखेती किसान पंचायत सितंबर 2026: खरीफ फसलों पर हुई महत्वपूर्ण चर्चा

मेरीखेती किसान पंचायत से किसानों को मिला नया मंच

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के सौजन्य से अनुसूचित जाति उप-योजना (SCSP) के अंतर्गत "खरीफ फसलों के लिए उत्तम प्रबंधन पद्धतियाँ" विषय पर कृषक प्रशिक्षण एवं कृषि आदान वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम 7 सितंबर 2026 को उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले के खुर्जा ब्लॉक स्थित भाईपुर (खुर्जा) बु. शहर में मौर्या फार्म हाऊस पर आयोजित हुआ। इस अवसर पर डॉ संदीप कुमार लाल की अध्यक्षता में मेरीखेती किसान पंचायत सितंबर 2026 का भी आयोजन हुआ। किसान पंचायत के माध्यम से किसानों को एक साझा मंच मिला, जहां उन्होंने खेती से संबंधित अपने अनुभव, समस्याएं और सुझाव एक-दूसरे के साथ साझा किए।

किसानों को वैज्ञानिक खेती की दी गई जानकारी

कार्यक्रम में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली से जुड़े कृषि वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों ने किसानों को खरीफ मौसम की प्रमुख फसलों के वैज्ञानिक प्रबंधन के बारे में जानकारी दी। प्रशिक्षण के दौरान किसानों को फसल की बुवाई से लेकर कटाई तक अपनाई जाने वाली विभिन्न तकनीकों के बारे में समझाया गया। विशेषज्ञों ने बताया कि फसल की सही समय पर बुवाई, गुणवत्तापूर्ण बीज का चयन, संतुलित उर्वरक का प्रयोग, सिंचाई प्रबंधन और खरपतवार नियंत्रण जैसी व्यवस्थाएं उत्पादन बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। किसानों को यह भी बताया गया कि वैज्ञानिक पद्धतियों को अपनाकर खेती की लागत को नियंत्रित करने के साथ-साथ मिट्टी की उर्वरता और फसल की गुणवत्ता को बेहतर बनाया जा सकता है।

अनुसूचित जाति उप-योजना के तहत किसानों तक पहुंचा लाभ

यह आयोजन अनुसूचित जाति उप-योजना (SCSP) के अंतर्गत किया गया, जिसका उद्देश्य

कृषि क्षेत्र में किसानों को तकनीकी जानकारी और आवश्यक कृषि संसाधनों तक बेहतर पहुंच उपलब्ध कराना है। कार्यक्रम के दौरान किसानों को कृषि आदानों का वितरण भी किया गया। विशेषज्ञों ने किसानों को इन कृषि आदानों के उचित एवं वैज्ञानिक उपयोग की जानकारी दी, ताकि उनका अधिकतम लाभ फसल उत्पादन में मिल सके। कार्यक्रम में इस बात पर विशेष जोर दिया गया कि केवल कृषि आदान उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं है, बल्कि किसानों को उनके सही उपयोग, मात्रा और समय की जानकारी होना भी आवश्यक है। इसी उद्देश्य से प्रशिक्षण और आदान वितरण को एक साथ जोड़ा गया।

SCSP के नोडल अधिकारी एस.के. लाल रहे मुख्य अतिथि

कार्यक्रम में SCSP के नोडल अधिकारी श्री एस.के. लाल जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके साथ कृषि वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों ने भी कार्यक्रम में भाग लिया और किसानों से सीधे संवाद किया। उन्होंने किसानों को कृषि क्षेत्र में उपलब्ध वैज्ञानिक तकनीकों का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में किसानों की समस्याओं और खेती से जुड़ी व्यावहारिक चुनौतियों को भी सुना गया। किसानों ने फसल उत्पादन, कृषि आदानों, मौसम, रोग एवं कीट प्रबंधन तथा खेती की लागत से संबंधित विषयों पर विशेषज्ञों से जानकारी प्राप्त की। इस तरह कार्यक्रम किसानों और कृषि वैज्ञानिकों के बीच संवाद का महत्वपूर्ण माध्यम बना।

खरीफ फसलों में प्रबंधन तकनीकों पर रहा विशेष जोर

प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य विषय खरीफ फसलों के लिए उत्तम प्रबंधन पद्धतियां रहा। कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को बताया कि खरीफ मौसम में मौसम की परिस्थितियां फसल उत्पादन को काफी प्रभावित करती हैं। ऐसे में किसान को फसल की जरूरत के अनुसार सिंचाई, पोषक तत्व प्रबंधन और कीट-रोग नियंत्रण की रणनीति अपनानी चाहिए। वैज्ञानिकों ने किसानों को फसल की स्थिति की नियमित निगरानी करने और समस्या दिखाई देने पर समय रहते उचित उपाय करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि बिना आवश्यकता के रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग करने के बजाय वैज्ञानिक सलाह के आधार पर इनका उपयोग करना किसानों के लिए अधिक लाभकारी हो सकता है। इससे खेती की लागत कम करने और पर्यावरण संरक्षण में भी मदद मिलती है।

प्रगतिशील किसानों ने कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर लिया हिस्सा

कार्यक्रम में खुर्जा ब्लॉक और आसपास के गांवों से बड़ी संख्या में किसान शामिल हुए। हरकेश, मनोहर, योगेश, अभिजीत, बलवीर, बिल्लू, कुमरपाल, दिलीप, राजाराम, ताराचंद, रोहतास, साहिब सिंह, नेत्रपाल, जग्गा प्रधान जी, डामिल कुमार और मदनलाल जी सहित लालपुर, अखत्यारपुर और आसपास के गांवों के प्रगतिशील किसानों ने कार्यक्रम में अपनी सहभागिता दर्ज कराई। किसानों ने प्रशिक्षण के दौरान कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दी गई जानकारी को ध्यानपूर्वक सुना और खेती से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा की। किसानों की भागीदारी से कार्यक्रम को अधिक व्यावहारिक स्वरूप मिला, क्योंकि किसानों ने अपने खेतों में आने वाली वास्तविक समस्याओं और अनुभवों को विशेषज्ञों के साथ साझा किया।

नारियल किसानों को मिलेगा बड़ा फायदा, निर्यात में दर्ज हुई 62% प्रतिशत बढ़ोतरी

नारियल निर्यात बढ़कर ₹7,038 करोड़ पहुंचा

देश में नारियल, काजू, कोको, मसाले, कॉफी और अन्य बागवानी फसलों की खेती करने वाले किसानों के लिए नए बाजार अवसर तैयार करने पर जोर दिया जा रहा है। हैदराबाद में आयोजित दक्षिणी राज्यों के क्षेत्रीय कृषि सम्मेलन में कृषि क्षेत्र की मौजूदा चुनौतियों, आगामी रबी मौसम की तैयारियों और बागवानी फसलों की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा हुई। सम्मेलन में नारियल के निर्यात में हुई उल्लेखनीय वृद्धि को प्रमुख उपलब्धि के रूप में रेखांकित किया गया। प्रस्तुत जानकारी के अनुसार, देश का नारियल निर्यात एक वर्ष में ₹4,349 करोड़ से बढ़कर ₹7,038 करोड़ तक पहुंच गया है। यह करीब 62 प्रतिशत की वृद्धि है। दक्षिण भारत देश के प्रमुख नारियल उत्पादक क्षेत्रों में शामिल है, इसलिए राज्यों से कहा गया कि वे निर्यात के बढ़ते अवसरों का लाभ किसानों तक पहुंचाने के लिए प्रभावी रणनीति तैयार करें।

नई नारियल योजना से किसानों को मिलेंगे बेहतर अवसर

सरकार ने बजट में नारियल क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए एक नई योजना की घोषणा की है। सम्मेलन में इस योजना को जमीन पर प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए आवश्यक कदमों और रणनीतियों पर चर्चा की गई। योजना का उद्देश्य नारियल उत्पादन से जुड़े किसानों को उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन के स्तर पर बेहतर अवसर उपलब्ध कराना है। निर्यात में बढ़ती मांग को देखते हुए किसानों को गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए प्रोत्साहित करने के साथ बाजार से बेहतर तरीके से जोड़ने पर भी जोर दिया गया। दक्षिणी राज्यों में नारियल की व्यापक खेती को देखते हुए स्थानीय उत्पादन को वैश्विक बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने की जरूरत बताई गई। इससे किसानों को घरेलू बाजार के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी संभावित नए अवसर मिल सकते हैं।

60-70 साल पुराने नारियल बागानों का

होगा पुनर्वास

पुराने नारियल बागानों की घटती उत्पादकता किसानों के सामने एक बड़ी चुनौती बन रही है। सम्मेलन में बताया गया कि 60 से 70 वर्ष पुराने नारियल के पेड़ों की उत्पादकता कई मामलों में कम हो जाती है और उपज की गुणवत्ता भी अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहती। ऐसे बागानों के पुनर्वास के लिए राज्यों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार रणनीति तैयार करने पर जोर दिया गया। इसके तहत पुराने पेड़ों को एक साथ हटाने के बजाय चरणबद्ध तरीके से नए पौधे लगाने की व्यवस्था पर विचार किया जा रहा है। इस प्रक्रिया में पुराने पेड़ों की जगह धीरे-धीरे नए पौधे लगाए जाएंगे, जिससे बागान का उत्पादन लंबे समय तक जारी रखा जा सके। चरणबद्ध पुनर्वास से किसानों की आय पर अचानक पड़ने वाले प्रभाव को कम करने और भविष्य में उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलने की उम्मीद है।

काजू-कोको और मसालों के लिए बाजार विस्तार पर जोर

नारियल के अलावा दक्षिण भारत में काजू और कोको जैसी फसलों में भी व्यापक संभावनाएं हैं। सम्मेलन में राज्यों को इन फसलों के विकास के लिए पहले से योजनाएं तैयार करने की सलाह दी गई, ताकि किसान बढ़ते बाजार अवसरों का लाभ उठा सकें। दक्षिणी राज्यों में मसाले, कॉफी, काजू, कोको और चंदन जैसी फसलों का भी महत्वपूर्ण उत्पादन होता है।

इन फसलों के उत्पादन, गुणवत्ता, प्रसंस्करण और विपणन को बेहतर ढंग से जोड़ने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। कृषि मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने से किसानों को स्थानीय मंडियों के साथ-साथ बाहरी बाजारों तक पहुंच बनाने में मदद मिल सकती है। सरकार और राज्यों के स्तर पर उत्पादन से लेकर बाजार तक बेहतर समन्वय विकसित करने की दिशा में योजनाएं तैयार करने पर भी चर्चा हुई।

वैश्विक बाजार और अंतरराष्ट्रीय मानकों पर फोकस

कृषि निर्यात को बढ़ावा देना भी सम्मेलन की प्रमुख चर्चाओं में शामिल रहा। मुक्त व्यापार समझौतों के संदर्भ में फलों, सब्जियों, अनाजों और अन्य कृषि उत्पादों के लिए अंतरराष्ट्रीय बाजार में उपलब्ध अवसरों का अध्ययन करने की आवश्यकता बताई गई। राज्यों और संबंधित संस्थानों से कहा गया कि वे वैश्विक बाजार में कृषि उत्पादों की मांग और बदलती आवश्यकताओं को समझें तथा किसानों को गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए आवश्यक तकनीकी सहायता उपलब्ध कराएं।

इसके लिए कृषि मूल्य श्रृंखला में अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन महत्वपूर्ण माना गया। उत्पादन की गुणवत्ता, पैकेजिंग, प्रसंस्करण और विपणन व्यवस्था को मजबूत करने से भारतीय कृषि उत्पादों को बाहरी बाजारों तक पहुंचाने में मदद मिल सकती है। किसानों को वैश्विक मांग के अनुरूप उत्पादन के लिए तैयार करना इस रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा होगा।

क्षेत्रीय कृषि रणनीति और रबी मौसम की तैयारी

क्षेत्रीय कृषि सम्मेलन का उद्देश्य राज्यों की अलग-अलग कृषि परिस्थितियों के अनुरूप कार्य योजनाएं तैयार करना भी रहा। देश के विभिन्न क्षेत्रों में मिट्टी, जल उपलब्धता, जलवायु और कृषि-जलवायु परिस्थितियों में अंतर है। ऐसे में सभी क्षेत्रों के लिए एक जैसी कृषि रणनीति अपनाने के बजाय स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर योजनाएं बनाने पर जोर दिया गया।

सम्मेलन में अल नीनो के संभावित प्रभाव, फसल विविधीकरण और आगामी रबी मौसम की तैयारियों पर भी चर्चा हुई। राज्यों को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार कृषि कार्य योजना तैयार करने तथा रबी मौसम से पहले बीज, उर्वरक और अन्य कृषि संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए समन्वय मजबूत करने पर जोर दिया गया। सफल कृषि तकनीकों को एक राज्य से दूसरे राज्य में

स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार लागू करने की पहल पर भी चर्चा हुई।

डिजिटल कृषि में किसान पहचान और 'भारत विस्तार' की प्रगति

सम्मेलन में डिजिटल कृषि से जुड़े कार्यों की भी समीक्षा की गई। किसान पहचान, कृषि प्रणाली, डिजिटल फसल सर्वेक्षण और 'भारत विस्तार' जैसी पहलों की प्रगति पर राज्यों से जानकारी ली गई। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने राज्यों को निर्धारित लक्ष्यों और प्रतिबद्धताओं को तय समय सीमा के भीतर पूरा करने की सलाह दी। तेलंगाना और कर्नाटक में किसान पहचान पत्र बनाने के काम में 75 प्रतिशत से अधिक प्रगति होने की जानकारी दी गई।

तमिलनाडु, कर्नाटक और तेलंगाना में जियो-रेफरेंसिंग का काम भी तेजी से आगे बढ़ रहा है। 'भारत विस्तार' सेवा को 13 क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराने के लिए काम किया जा रहा है, ताकि किसान अपनी भाषा में कृषि संबंधी सवाल पूछ सकें और उसी भाषा में सलाह प्राप्त कर सकें। इसे राज्यों की कृषि योजनाओं से जोड़ने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। अंडमान और निकोबार, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और केरल में डिजिटल फसल जनगणना पूरी होने की जानकारी भी दी गई।

खेतों तक पहुंचे कृषि विज्ञान, 28-29 सितंबर को रबी सम्मेलन

कृषि अनुसंधान को प्रयोगशालाओं तक सीमित रखने के बजाय किसानों के खेतों तक पहुंचाने की जरूरत पर भी सम्मेलन में विशेष जोर दिया गया। कृषि मंत्री ने कहा कि देश में करीब 16,000 वैज्ञानिक हैं और आईसीएआर संस्थानों, कृषि विज्ञान केंद्रों तथा कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिक गांवों और खेतों में जाकर किसानों की समस्याओं पर सीधे काम कर सकते हैं। राज्यों को अपनी सुविधानुसार 15 या 20 दिनों के विशेष शिविर आयोजित करने का सुझाव दिया गया, जहां किसान, वैज्ञानिक और कृषि विभाग के अधिकारी एक साथ बैठकर समस्याओं और उनके समाधान पर चर्चा कर सकें।

आगामी रबी मौसम की तैयारियों के लिए 28 और 29 सितंबर 2026 को दिल्ली के पूसा संस्थान में रबी सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इसमें राज्यों के कृषि मंत्री और अधिकारी अपनी रबी कार्य योजनाओं के साथ शामिल होंगे। संभावित बुवाई क्षेत्र के आधार पर बीज, उर्वरक और अन्य कृषि इनपुट की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए समन्वित योजना तैयार की जाएगी।

MERIKHETI

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010